THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट

- क्या बला है
- कैसे काम करता है
- कैसे जुड़े
- समय का उपयोग या दुरुपयोग
- मालिक कौन
- जेब पर कितना भारी
- भारत में बढ़ते कदम
- फायदे और नुकसान
- .....वगैरह, वगैरह

अंग्रेजी में तो आपको इंटरनेट पर बहुत सी सामग्री पढ़ने को मिल जाएगी मगर शायद **रांची एक्सप्रेस** अकेला समाचार पत्र होगा जो सितम्बर 1998 से प्रत्येक सप्ताह अपने पाठकों को इंटरनेट के विषय में तरह-तरह की जानकारी हिन्दी में उपलब्ध करा रहा है। इंटरनेट के विषय में **रांची एक्सप्रेस** में प्रकाशित कुछ चुने हुए लेख हम यहां दे रहे हैं। ये लेख श्री अजय जैन, दिल्ली ने लिखे हैं। यह पुस्तिका इंटरनेट पर हमारी वेब साइट पर भी उपलब्ध है।

रांची एक्सप्रेस समूह

रांची एक्सप्रेस
सांध्य रांची एक्सप्रेस
एक्सप्रेस इन्फो बुक
दृष्टि - केबल टीवी पर समाचार
रांची एक्सप्रेस ऑनलाइन - इंटरनेट पर समाचार एवं अन्य सामग्री

RANCHI EXPRESS may be the only Hindi newspaper giving a weekly column - **NET EXPRESS** - providing the readers information on different aspects of Internet in plain and simple Hindi. In this booklet we are giving a few of the articles published in the last one year. This book is also available on our web site.

सिर्फ व्यक्तिगत प्रसारण के लिए - बिक्री के लिए नहीं
© Ranchi Prakashan Pvt. Ltd. All rights reserved. Reproduction in any manner in whole or part without permission is prohibited

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

I am so thrilled to see Ranchi Express on the Net. GREAT JOB. KEEP IT UP !!!!!

- Sanjay Saran, Nimr, Muscat Oman

A FEW OF THE ENTRIES IN OUR "GUEST BOOK"

Senti kar deli o baba..hamar ranchi yaad aa geli..auto dhar ke duranda jayeboo baba.. GREAT to see RANCHI on the net...keep up the good job..miss u all ..specially BIT Mesra..love JHUMHAR & handiya.

- Siddhartha Banerjee, Essex, UK

Its great to read news from the home town, where I was born and brought up. I was used to Ranchi Express with my morning tea, I really missed Ranchi Express in UK. They made it possible, Thanks for the whole team for a great job.

- Sujeet Das, Berkshire United Kingdom

I am amazed to see Ranchi Express on the Net. Ranchi is the place where I was born and brought up. I have lived in HEC colony, Dhurwa Currently I am working in an American Software House "Ardent Software Inc." in Sydney, Australia. I am impressed with the Ranchi Express Online Edition on the Net. I congratulate every one who has done a tremendous job putting on Ranchi on the Web. Keep it up.

- Rajan Kumar, Sydney, NSW Australia

Its unbelievable to see Ranchi Express in the Net. As I was born and brought up in Ranchi, I was missing Ranchi very much.I think Ranchi Express has done a great job for those people who are out of Ranchi...really its great. CONGRATULATIONS.....Keep it UP

- Rupesh Prasad, San Antonio, Texas USA

IT IS QUITE EXCITING TO SEE OUR HOME NEWS PAPER ON LINE. I USED TO READ THIS NEWS PAPER SOME 15 YRS BACK. GETTING THE SAME PAPER ON LINE IS REALLY INTERESTING. I AM COMMISSIONER OF POLICE OF TRIVANDRUM CITY. I BELONG TO HAZARIBAGH. I CONGRATULATE RANCHI EXPRESS FOR THIS WEB ADVENTURE.

- ARUN KUMAR SINHA, TRIVANDRUM, INDIA

---

wow! ranchi express on line. wow! may god bless you. ranchi being my birthplace, i'm more attatched to it than anything else. long live ranchi!

- narinder s mangat, ontario, canada

I Have an indian friend who lives in Ranchi. I like your city. Many compliments for Ranchi Express. I shall visit your site. Ciao

- Mario Saccà, Catanzaro, Italy Calabria

It's great to see my Hometown in the net. I can't resist myself seeing Ranchi Express everyday. Ultimately this is where I belong. I am in Singapore.

- Surya Patar Munda, Singapore

Can't believe of reading about my loving place Ranchi,the place where I spent my most wonderful years studying in Bishop westcott boys'school and lot other attachements. Ranchi express is like a memory down the lane for me.

- VIVEK SINGH, ABU-DABHI, ABU-DABHI U.A.E

Great..... For years my breakfast was not complete without Ranchi Express. After so many years of staying away from home I am picking up the old habit again. Thanks To Ranchi Express Online. keep it up.

- Anoop Shekhar, USA

Just discovered the site while surfing. Congratulations! It is really nice to be able to pick up some news summary from South Bihar. I grew up in Jamshedpur ('67 batch KMPM High School) and left in 1967. But I still visit Jamshedpur once every 3-4 years and love the South Bihar area. Congratulations to the Ranchi Express organizers for creating and maintaining the site with good links to other associated areas of interest. I was very happy to read the news summary. I will be a regular visitor to the site and I plan to inform all my friends South Bihar about it. I wish Ranchi Express all the success it rightfully deserves.

- Subir Mozumdar, Phoenix, Arizona U.S.A.

Isn't it great to find s'thing so dear to you while actually being so far from it. I remember, everyday morning we would be waiting eagerly for the Ranchi Express to be delivered. Moni's cartoons used to be real witty and humurous. I am really getting nostalgic about it. All the best Ranchi Express. Another pioneering effort from the leader.

- Chinmoy Chatterjee, Chicago, ILLINOIS USA

Looking everyday at other websites, i often dreamt..... Now i don't feel away from the soils of Bihar, especially Dhanbad....I feel fresh when i open this site. thank you, KEEP up the good work!!!!

- amar, gaborone, Botswana

Great Guns Ranchi Express. Bravo! Elated seeing RE at net. Made me feel nostalgic about my city. I long to visit my place, my people, my friends.

- Ajay Sinha, Pune, India

I am in Germany since last two months and will remain here for about two years. I am daily on line on your web page to get the news of South Bihar. I have lived all my life, more than 25 years at Hazaribag. I feel at home when I get the news about my region. The presentation is very good.

- Sanat Kumar, Gottingen/Stuttgart, Germany

Hey it's fantastic to see Ranchi and Jamshedpur on the map at last!! as a former resident of Moubhander near Ghatsila I still miss Bihar very much and many warm memories have come flooding back after visiting your site. Please keep up the great work as I will visit often.

- Paul Bachman, Perth, Western Australia, AUSTRALIA

It's great .I am thrilled as well as surpried to see Ranchi Express on web.I am from small village (Chakulia) of south Bihar. At present I am working in Thailand. All the BEST to Ranchi Express.

- Pramod Khandelwal, Bangkok, Bangkok Thailand

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट - क्या बला है यह?

आप पहली बार विदेश यात्रा पर जा रहे हों तो सबसे पहले क्या करेंगे आप? विदेश में रहने वाले अपने किसी मित्र या संबंधी को फोन करेंगे या उनको फैक्स द्वारा सूचित करेंगे ताकि वो आपको सारी इच्छित जानकारी दे सके। पर यह स्थिति कल तक थी। अब ये बात पुरानी हो चुकी है। अब तो बस, अपने कम्प्यूटर के सामने बैठिये, इंटरनेट से जुड़िये और कुछ बटन दबाने भर की देर है। आपको उस स्थान के बारे में छोटी से छोटी जानकारी कुछ ही पल में मिल जायेगी। जी हां, ये कमाल इंटरनेट का है। टेलीफोन और फिर फैक्स के आविष्कार के बाद सब कहने लगे कि दुनिया बहुत छोटी हो गई है, लेकिन इंटरनेट के आविष्कार के बाद तो ऐसा लगता है कि दुनिया आपकी मुट्ठी में आ गई है।

आइये देखे क्या है ये बला? इंटरनेट को एक वाक्य में कह सकते हैं ''नेटवर्कों का नेटवर्क''। जब एक से ज्यादा कम्प्यूटरों को एक साथ जोड़ा जाता है तो उसे नेटवर्क कहते हैं और इंटरनेट ऐसे अनगिनत नेटवर्कों का ही नेटवर्क है। 1969 में अमेरिकी प्रतिरक्षा विभाग की अग्रणी रक्षा अनुसंधान प्रोजेक्ट एजेंसी (Defense Advanced Research Projects Agency) के वैज्ञानिकों की सहायता के लिये चार कम्प्यूटरों का एक छोटा सा नेटवर्क तैयार किया गया था। इनमें से तीन कैलिफोर्निया में थे और एक यूटा में। आरंभ में इसका उपयोग कुछ सूचनाओं के आदान-प्रदान और ई-मेल संदेश आदि भेजने के लिये किया जाता था और इस नेटवर्क को बड़े गर्व से अर्पानेट (ARPANET) कहा जाता था। धीरे धीरे इसकी लोकप्रियता बढ़ी और 1972 तक इस नेटवर्क में 37 कम्प्यूटर शामिल हो गये। इस समय तक किसी को एहसास नहीं था लेकिन यह छोटा सा नेटवर्क एक बड़ी घटना को जन्म दे चुका था। जल्दी ही नेशनल साइंस फाउंडेशन (National Science Foundation), एक और अमेरिकन सरकारी एजेंसी ने NSFNET के नाम से नेटवर्क बनाया। यह अमेरिका में स्थित स्कूलों और कॉलेजों को लक्ष्य बनाकर शुरू किया गया। बाकी विश्व भी इससे अछूता नहीं बचा और जगह जगह इस तरह के नेटवर्क तैयार करने के प्रयास चलने लगे। 1987 तक NSFNET से इतने लोग एवं कम्प्यूटर जुड़ चुके थे कि उसे दोबारा व्यवस्थित करने की जरूरत पड़ गयी। इंटरनेट को हम आज जिस रूप में देख रहे हैं, वह 1990 तक शुरू हो चुका था। तब से आज तक इसका विकास दिन दुना रात चौगुना हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार 1996 में 7 करोड़ उपभोक्ता इंटरनेट से जुड़े हुए थे। आप ये सोच रहे होंगे कि आखिर इतने लोग इंटरनेट पर क्या कर रहे हैं? केवल समय और पैसे की बर्बादी या कुछ उत्पादक काम। इसका जवाब है सब कुछ। यह उपयोक्ता पर निर्भर करता है कि वह इंटरनेट पर व्यर्थ अपना समय गवांता है या उससे कुछ उपयोगी काम करता है। विदेशों में तो लोगों ने इंटरनेट पर व्यवसाय भी शुरू कर दिया है। इसके बारे में विस्तृत जानकारी हम आगामी अंकों में देंगे और इसमें सिर्फ कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाले ही नही, वरन विश्वविद्यालय, सरकारी विभाग, बड़ी कार्पोरेट कपंनियां यहां तक कि राजनीतिक पार्टियां भी इंटरनेट से जुड़ी हुई हैं। यह न सिर्फ एक अत्यंत उपयोगी यंत्र है, यहां पर मनोरंजन के भी कई साधन उपलब्ध हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध इन हजारों वेब ठिकानों में से प्रत्येक वास्तव में आपने आप में एक नेटवर्क है और ये सभी ठिकाने एक दूसरे से विभिन्न साधनों के माध्यम से जुड़े हुए हैं, चाहे वह टेलीफोन लाइन हो या लीज्ड लाइन या फिर माइक्रोवेब लिंक। चूंकि ये नेटवर्क न सिर्फ भौगोलिक दृष्टि से अलग हैं, वरन, कम्प्यूटर प्लेटफार्म्स और नियंत्रक साफ्टवेयर्स की दृष्टि से भी इनमें भिन्नता है। अत: इन विभिन्न संरचनाओं वाले नेटवर्कों में सामन्जस्य स्थापित करने के लिये कुछ मानक संचार नियमों की जरूरत है। इंटरनेट के मामले में प्रयोग होने वाले इन नियमों को Transmission Control Protocol / Internet Protocol (TCP/IP) कहा जाता है। इस TCP/IP की उपस्थिति ये सुनिश्चित करती है कि आप 286 कम्प्यूटर प्रयोग कर रहे हैं या नई तकनीक पर आधारित पेटियम, कोई फर्क नही पड़ता। आप इंटरनेट से जुड़ कर इसका पूरा पूरा लाभ उठा सकते हैं।

इंटरनेट के भारत में बढ़ते कदम

इंटरनेट क्रांति की शुरुआत नब्बे के दशक के शुरूआती दिनों में अमेरिका में हो चुकी थी। मगर भारत तक पहुंचने में इसे पांच वर्षों का सफर तय करना पड़ा। लेकिन एक बार इस धरती पर कदम पड़ने के बाद लोगों ने जिस तरह इंटरनेट को गले लगाया, वह हमारे सामने सफलता की एक कहानी पेश करता है। 15 अगस्त, 1995 को जब इंटरनेट भारत में शुरू हुआ तो विदेश संचार निगम लिमिटेड को सिर्फ 703 ग्राहक मिले थे। उस समय विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) के पास 64 लाइनें थी और एक इंटरनेट बिंदु था। आज करीब 1,20,000 ग्राहकों और अनुमानत: 6,00,000 उपभोक्ताओं को सेवा प्रदान करते हुए VSNL की कार्य क्षमता 12,000 लाइनों और 40 बिंदुओं की हो गई है।

बड़े मियां, छोटे मियां

जिन इंटरनेट उपयोक्ताओं के पास वी.एस.एन.एल. का इंटरनेट कनेक्शन है, उनका ई-मेल पता याद रखना काफी कठिन होता है क्योंकि यह काफी लंबा होता है। साधारणत: वी.एस.एन.एल. के इंटरनेट उपयोक्ताओं का ई-मेल पता username@servername.vsnl.net.in के रूप में होता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि वी.एस.एन.एल. अपने उपयोक्ताओं को एक छोटे ई-मेल पते की सुविधा भी देता है। इस सुविधा के अंतर्गत उपयोक्ता का ई-मेल पता username@vsnl .com के रूप में आ जाता है।

इसके लिये आपको http://mail.vsnl.com नाम के वेब ठिकाने पर जाना होगा। इस वेब ठिकाने पर आपको अपना यूजर नेम, सर्वर नेम, पासवर्ड तथा नये ई-मेल पते के लिये यूजर नेम डालना होता है। अगर आपने यूजर नेम, सर्वर नेम तथा पासवर्ड सही डाला तथा आपके द्वारा मांगा गया यूजर नेम उपलब्ध हुआ तो आपको एक छोटा ई-मेल पता मिल जायेगा। अगर आपके द्वारा मांगा गया यूजर नेम उपलब्ध नही है तो आप दूसरा नाम डालकर कोशिश कर सकते हैं।

अब आपके पास दो ई-मेल पते हो जायेंगे, एक छोटा पता और एक बड़ा पता।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट काम कैसे करता है

पिछले अंक में हमने आपको बताया कि इंटरनेट दुनिया भर में फैले अनगिनत नेटवर्कों का नेटवर्क है। संसार भर के करोड़ों लोग इंटरनेट का उपयोग सूचनायें पाने के लिए, व्यापार करने के लिए, विश्व के अन्य लोगों से सम्पर्क साधने के लिए, संगीत सुनने एवम् इसी तरह के कई अन्य कार्य करने के लिए करते हैं। आखिर ये सारे काम होते कैसे हैं? इन सभी कामों का आधार है सूचना का आदान प्रदान! आप कहेंगे इसमें बड़ी बात क्या है? टेलीविजन, रेडियो आदि माध्यमों के द्वारा भी सूचना का आदान प्रदान होता हैं। तो पहली बात यह है कि इंटरनेट पर आप क्या सूचना प्राप्त कर सकते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है। जब आप कोई अखबार पढ़ते हैं, टीवी देखते हैं या रेडियो सुनते हैं तो आप सूचना का एक छोटा सा हिस्सा देखते या सुनते हैं और वह भी आपके लिए कोई और चुनता है। लेकिन इंटरनेट पर आप, अपने करोड़ों साथी उपयोक्ताओं के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि आपको कौन सी सूचना चाहिए? इंटरनेट की यह विशेषता कि कोई भी उपयोक्ता इसमें भाग ले सकता है, इंटरनेट को अन्य संचार माध्यमों से अलग बनाता है।

इंटरनेट पर सूचनाओं के आदान प्रदान की सारी प्रक्रिया समझने से पहले हमें यह समझना होगा कि यह आदान प्रदान का काम करता कौन है?

यह काम होता है क्लाईट (Client) एवं सर्वर (Server) द्वारा। इंटरनेट के द्वारा आप जो भी सूचना प्राप्त करते हैं, वह जिस कम्प्यूटर पर मौजूद होती है उसे हम सर्वर कहते हैं। सर्वर किसी भी तरह का कम्प्यूटर हो सकता है, लेकिन इस कम्प्यूटर को सर्वर की संज्ञा, इसके द्वारा अदा की जाने वाली भूमिका से मिलती है। यह क्लाईट द्वारा मांगी जाने वाली सूचनाओं का संग्रह करता है। क्लाईट एक कम्प्यूटर होता है (या अधिक उपयुक्त शब्दों में कहें तो यह एक तरह का कम्प्यूटर प्रोग्राम होता है), जो यह जानता है कि किसी सर्वर पर स्थित सूचनाओं को किस तरह निकाला जाये। इस तरह से हम देखें तो इंटरनेट, क्लाईट एवं सर्वर के बीच एक संचार माध्यम का काम करता है। यह इंटरनेट नहीं, बल्कि विभिन्न तरह के क्लाइंट एवं सर्वर होते हैं, जो आपको विभिन्न तरह के कार्य करने लायक वातावरण प्रदान करते हैं।

अब सवाल उठता है कि क्लाईट एवं सर्वर के बीच सूचना किस तरह गतिशील होती है। इंटरनेट पर कोई भी सूचना छोटे छोटे टुकड़ों में बंट कर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचती है। जब भी कोई क्लाईट कम्प्यूटर किसी सर्वर कम्प्यूटर से किसी सूचना की मांग करता है तो सर्वर उस सूचना को निश्चित आकार के टुकड़ों में बांटकर क्लाईट को वापस भेजता है। क्लाईट कम्प्यूटर पर जब सभी टुकड़े पहुंच जाते हैं तो क्लाईट इन टुकड़ों को जोड़कर पूरी जानकारी उपयोक्ता के सामने पेश करता है। ठीक यही प्रक्रिया तब भी अपनायी जाती है, जब एक उपयोक्ता कोई सूचना या संदेश किसी अन्य उपयोक्ता को भेजना चाहता है। थोड़ा सा अन्तर यह होता है कि भेजने वाला कम्प्यूटर सीधी सूचना पाने वाले कम्प्यूटर को नहीं दे पाता। इसे हम एक उदाहरण द्वारा अच्छी तरह समझ सकते हैं। मान लिया कि एक व्यक्ति, जिसका ई-मेल पता है akj@dl1.vsnl.net.in, किसी abc@hotmail.com पते वाले व्यक्ति को एक ई-मेल संदेश भेजता है! जैसे ही पहला व्यक्ति अपने कम्प्यूटर से ई-मेल संदेश भेजता है, VSNL की मेल प्रक्रिया इस संदेश को छोटे छोटे टुकड़ों में बांट देती हैं तथा पाने वाले व्यक्ति का पता हर टुकड़ें पर लिख देती हैं। इसके बाद ये सभी टुकड़ें मेल सर्वर पर पहुंचते हैं, जो एक स्थानीय डाकघर की तरह काम करता है। यह सभी टुकड़ों को प्राप्त करने के बाद, उन पर लिखा पता देखता है। उसके बाद अपनी विवरणी में जांचता है कि किस निजदीकी सर्वर को ई-मेल पाने वाले पते के बारे में जानकारी हो सकती है एवं इसके बाद इन टुकड़ों को उस सर्वर के पास भेज देता है। ये टुकड़े एक सर्वर से दूसरे सर्वर तक का यह सफर तब तक तय करते रहते हैं जब तक कि ये उस सर्वर पर न पहुंच जाये, जिसे ई-मेल पाने वाले पते के बारे में ठीक ठीक जानकारी हो। चूंकि हर सर्वर के पास अपने आसपास के कुछ एक सर्वर के बारे में ही जानकारी होती हैं अत: यह जरूरी नहीं कि ई-मेल संदेश अपना यह सफर हमेशा सबसे प्रभावी रास्ते से तय करे। हो सकता है कुछ ही मीलों की दूरी पर स्थित अन्य कम्प्यूटर पर यह संदेश पहुंचने से पहले विश्व के किसी अन्य कोने में जाये और फिर वहां से वापस अपने निश्चित स्थान पर पहुंचे।

इसके अलावा यह भी हो सकता है कि एक संदेश के अलग अलग टुकड़े अलग अलग रास्ते तय करके अपने स्थान पर पहुंचे। यद्यपि इन टुकड़ों ने, भेजने वाले व्यक्ति के ई-मेल सिस्टम से, अपना सफर एक ही साथ शुरू किया था। पाने वाले व्यक्ति का मेल सर्वर तब तक इंतजार करता है जब तक कि सभी टुकड़े उसके पास न पहुंच जाये और फिर उन्हें जोड़ कर पाने वाले व्यक्ति के डाक बक्से में डाल देता है। यह पूरी प्रक्रिया कुछ मिनटों से लेकर कुछ घंटों तक का समय ले सकती है। अगर किसी कारणवश यह संदेश अपने निश्चित ठिकाने तक नहीं पहुंच पाता तो भेजने वाले व्यक्ति के पास इसकी सूचना पहुंच जाती है। इंटरनेट पर इन टुकड़ों के आदान प्रदान के लिए प्रयोग होने वाले नियम इंटरनेट प्रोटोकॉल कहलाते हैं एवं किसी भी सूचना को टुकड़ों में बांटने की एवं टुकड़ों को वापस जोड़ने की प्रक्रिया में प्रयोग होने वाले नियमों को ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकॉल कहा जाता हैं। संक्षेप में इन नियमों को TCP / IP के नाम से जाना जाता है।

इंटरनेट ट्रैफिक जाम
क्लिंटन-मोनिका प्रकरण
पर स्टार की रिपोर्ट

11 सितम्बर 1998 को जब बिल क्लिंटन, मोनिका लेविंस्की प्रकरण के स्वतंत्र वकील कैनेथ स्टार की रिपोर्ट इंटरनेट पर जारी हुई, तो लगा कि इंटरनेट पर हर कोई सिर्फ और सिर्फ इस रिपोर्ट को पढ़ना चाहता है। और तो और इस रिपोर्ट के जारी होने से घंटों पहले ही इंटरनेट के अधिकतर सर्वरों को अपना सबसे व्यस्त दिन व्यतीत करना पड़ा। सी.एन.एन. के वेब ठिकाने पर करीब तीन लाख व्यक्ति प्रति मिनट की दर से लोग इस रिपोर्ट को पढ़ना चाह रहे थे। इससे पहले सी. एन. एन. का व्यस्तम दिन 31 अगस्त था जब कि शेयर बाजार लुढ़के थे और उस दिन तीन लाख बीस हजार व्यक्ति प्रति मिनट की दर से सी.एन.एन. के वेब ठिकाने पर पहुंचे थे। इंटरनेट पर किसी भी सूचना को इतने बड़े पैमाने पर उपलब्ध कराने की यह सभवत: पहली सबसे बड़ी घटना है।

हालांकि इस रिपोर्ट के कुछ हिस्से एक अश्लील पिक्चर की तरह चेतावनी समेटे हैं कि यह रिपोर्ट 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिये नही है। यह रिपोर्ट ऐसे कम्प्यूटरों पर भी नही पढ़ी जा सकती, जिनके इंटरनेट खाते मां बाप द्वारा बच्चों के लिये संचालित किये जाते हैं।

स्टार ने इस रिपोर्ट में क्लिंटन पर पद के दुरुपयोग, झूठी कसम खाना, गवाही के साथ छेड़खानी आदि जैसे आरोप लगाये हैं।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट : समय का उपयोग या दुरुपयोग

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि इन्टरनेट कैसे काम करता है। इस अंक में हम आपको बतायेंगे कि आप इंटरनेट पर क्या क्या कर सकते हैं।

इन्टरनेट के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी रखने वाले लोगों का सोचना है कि ई-मेल सेवा या जानकारी हासिल करना ही ऐसे काम हैं, जो इन्टरनेट पर किये जा सकते हैं। लेकिन कई अन्य सुविधायें भी इन्टरनेट पर उपलब्ध है। आइये इनके बारे में जानकारी हासिल करें।

सूचना के महासागर में तैरना : इंटरनेट, इस ब्रह्मांड में मौजूद लगभग हर विषय पर, जानकारी समेटे है। आप अपने मनचाहे विषय पर जानकारी हासिल कर सकते हैं, चाहे वह आपकी पसंदीदा फिल्म ''गॉडजिला'' हो या ज्योतिष शास्त्र का कोई रहस्य, बच्चों की देखभाल हो या घूमने फिरने के लिए कोई पर्यटन स्थल। इसके अलावा आज किसी भी बड़ी कंपनी के उत्पादों के बारे में जानना हो, किसी संग्राहलय या किसी कॉलेज के बारे में जानकारी इकट्ठी करनी हो, सब कुछ पलक झपकते इन्टरनेट के द्वारा आपके कम्प्यूटर की स्क्रीन पर हाजिर होगा।

ताजे समाचार पढ़ना : लगभग सभी प्रमुख अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं ने अपने पाठकों की सुविधा के लिए अपने अपने वेब ठिकाने स्थापित किए हैं। इंटरनेट से जुड़े पाठक दिन भर की ताजा खबरें या किसी भी घटना की जानकारी, उस घटना के घटित होने के कुछ ही घंटों बाद इन्टरनेट पर पढ़ सकते हैं। कुछ समाचार सेवाएं ऐसी भी हैं, जो आपके मन पसंदीदा विषय पर विश्व के प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार आपको ई-मेल द्वारा भेज देती है। इसका फायदा यह है कि आप अपनी सुविधा अनुसार जब चाहे इन समाचारों को पढ़ सकते हैं तथा विभिन्न समाचार पत्रों को खरीदने और पढ़ने में होने वाले झंझट से भी बचते हैं।

संदेश की अदला बदली : इसे हम ई-मेल के नाम से भी जानते हैं। साधारण भाषा में यह किसी भी संदेश का एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर हस्तांतरण होता है। इंटरनेट पर प्रत्येक उपयोक्ता का एक ई-मेल पता होता है जो किसी और व्यक्ति का नहीं हो सकता है। अगर आपका ई-मेल पता xyz@abc.com है और संसार का कोई भी व्यक्ति इस पते पर कोई संदेश भेजता है, तो वह सिर्फ आप तक ही पहुंचेगा। चिट्ठी गुम हो जाने का डर खत्म और मजेदार बात यह है कि इसमें साधारण डाक सेवा की तरह न तो डाक टिकट लगाना पड़ता है न ही कई दिनों तक इंतजार करना पड़ता है।

नये सॉफ्टवेयर हासिल करना : इन्टरनेट पर कई तरह के उपयोगी, मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ मुफ्त हैं और कुछ के लिए कीमत अदा करनी पड़ती है। आपको किसी भी सॉफ्टवेयर के ताजा उपलब्ध संस्करण के बारे में जानकारी हासिल करनी हो या उसे खरीदना हो तो इंटरनेट इसके लिए सबसे विश्वसनीय एवं सक्षम साधन है।

खरीदारी करें : इंटरनेट पर सबसे तेजी से पैर फैलाने वाली एवं विवादास्पद प्रक्रिया है खरीदारी। इंटरनेट पर आप किसी भी ऑनलाइन दुकान में पहुंचकर अपनी मनपसंद चीजें चुन सकते हैं और अपने पते के साथ क्रेडिट कार्ड नं. छोड़ सकते हैं। कुछ ही दिनों में आपको ये चीजें घर बैठे मिल जायेगी और बिल आपके क्रेडिट कार्ड कंपनी के पास पहुंच जायेगा। शल्य चिकित्सा के अलावा लगभग हर सेवा इंटरनेट पर विक्रय के लिए उपलब्ध है। यहां पर विवाद उठता है कि आप अपना क्रेडिट कार्ड नं तथा अन्य कुछ व्यक्तिगत सूचनायें किसी और को दे रहे हैं, जो कि खतरनाक भी हो सकता हैं।

बाते करना : संदेशों का आदान प्रदान इंटरनेट की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है किन्तु अगर हम टेलीफोन की तरह किसी से बातें कर सके तो क्या कहना? जी हां इंटरनेट पर आप ऐसा भी कर सकते हैं। आप अपने कम्प्यूटर पर कुछ लिखें और आपसे बातें करने वाला व्यक्ति इसका जवाब तुरंत अपने कम्प्यूटर पर टाइप करके आपको भेजे, ऐसे होती है इंटरनेट के द्वारा बातचीत।

वाद विवाद में हिस्सा लेना : ई-मेल सेवा का उपयोग करके आप अपने इच्छित किसी विषय से संबंधित वाद विवाद में भाग ले सकते हैं। यह कोई प्रतियोगिता नहीं होती, बल्कि किसी विषय में रुचि रखने वाले लोगों के बीच विचारों का पारस्परिक आदान प्रदान होता है।

खेल खेलें, सिनेमा देखें, संगीत सुनें: आप शतरंज खेलने के शौकीन हैं, लेकिन कोई साथी नही मिल रहा तो इंटरनेट पर विश्व के किसी अन्जान कोने में बैठे अन्जाने व्यक्ति के साथ मिलकर आप अपना यह शौक पूरा कर सकते हैं। आपको विश्व में सबसे ज्यादा पैसा कमाने वाली फिल्म 'टाइटैनिक' के बारे में जानकारी हासिल करनी हो या उसके कुछ ताजा अंश देखने हो या फिर माइकल जैक्सन के ताजा तरीन गाने को सुनना हो तो आपका यह शौक इंटरनेट के जरिए पूरा हो सकता है।

समय बर्बाद करें : जैसा कि हम पिछले अंकों में बता चुके हैं कि इंटरनेट पर आप कोई उपयोगी काम करते हैं या समय की बर्बादी, यह आप पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए कुछ लोग एक ही ई-मेल सेवा का उपयोग करके अपना काम निकालते हैं तो कुछ लोग इंटरनेट पर उपलब्ध अनेकों मुफ्त ई-मेल सेवाओं से जुड़कर अपने समय की बर्बादी करते हैं। अपने पाठकों के लिए हम बता दें कि जैसे हर चमकती चीज सोना नहीं होती वैसे ही इंटरनेट पर उपलब्ध हर सेवा या जानकारी उपयोगी नहीं होती। यह आपके विवेक पर निर्भर करता है कि आप अपने बहुमूल्य समय का उपयोग करना चाहते हैं या दुरुपयोग।

मुफ्त का डाकिया

मुंबई स्थित एक कंपनी ने ऑन लाइन डाक सेवा शुरू की है और इसने द इकोनोमिक टाइम्स-माइक्रोलैंड का वर्ष का ''सबसे उपयोगी वेब साइट'' पुरस्कार जीता है। यह वेब साइट विदेशों में रह रहे उन भारतीयों के लिए काफी उपयोगी है जो अपने भारत में बसे संबंधियों के साथ तुरंत सम्पर्क साधना चाहते हैं।

उपयोक्ता को पहले इस वेब ठिकाने पर अपना विवरण पंजीकृत करना पड़ता है। उसके बाद वह जब चाहे इस सेवा का उपयोग करके अपना संदेश एवम् संदेश पाने वाले का पता कंपनी को भेज देते हैं। कंपनी भारतीय डाक सेवा का उपयोग करके संदेश, पाने वाले पते पर भेज देती हैं। यह सेवा पुरी तरह मुफ्त है। अगर पत्र पहुंचने का समय और कीमत देखी जाये तो कुछ देश ऐसे भी हैं जहां से भारत तक पत्र पहुंचने में कम से कम पंद्रह दिन का समय लग जाता है और अच्छी खासी कीमत अलग से अदा करनी पड़ती है। एक टेलीफोन कॉल तो इससे भी मंहगी पड़ेगी।

मल्टीनेट नाम की इस कंपनी ने फरवरी 1998 में यह सेवा शुरू की थी और मई आते आते 500 संदेश प्रतिदिन एवम् अभी लगभग 1000 संदेश प्रतिदिन पहुंचाने का काम करती हैं। चूंकि यह सेवा मुफ्त है, इसकी लागत कंपनी के वेब ठिकाने पर विज्ञापनों द्वारा एवं स्थानीय डाक वितरण के प्रायोजकों द्वारा अदा की जाती है। इस सेवा का वेब ठिकाना है www.homeindia.com/post।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

वेब ठिकाने के पीछे छुपा रहस्य

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि इंटरनेट का प्रयोग आप किन-किन कामों के लिए कर सकते हैं। इस अंक में हम बतायेंगे कि किसी भी वेब ठिकाने, जैसे www.fashionindia.com का क्या अर्थ होता है?

इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर एक दूसरे को आई. पी. या इंटरनेट प्रोटोकाल पते से पहचानते हैं। इंटरनेट से जुड़े हर कम्प्यूटर का अपना एक आई. पी. पता होता है, जो चार नम्बरों का बना होता है तथा ये नम्बर दशमलव द्वारा अलग होते हैं। उदाहरण के लिये वी. एस. एन. एल. के दिल्ली स्थित एक कम्प्यूटर का आई. पी. पता है 202.54.1.30। जब भी आप वी. एस. एन. एल. द्वारा इंटरनेट से जुड़ते हैं, तो वह आपके कम्प्यूटर को एक अस्थायी आई. पी. पता दे देता है। इसका फायदा यह है कि आप अपने कम्प्यूटर को अस्थायी तौर पर इंटरनेट सर्वर की तरह प्रयोग कर सकते हैं।

डोमेन नाम सेवा या डी. एन. एस. इन नम्बरों को अंग्रेजी अक्षरों में बदल देता है। इन्हीं अंग्रेजी अक्षरों को मिलाकर बनता है एक वेब ठिकाने का नाम। हालांकि ये अंग्रेजी अक्षर सिर्फ उपयोक्ता की सुविधा के लिये होते हैं, कम्प्यूटर आपस में फिर भी पते के नम्बर वाले रूप में ही बातें करते हैं। किसी भी वेब ठिकाने के नाम के कई भाग होते हैं। उदाहरण के लिये www.abc.com को लें। इसका सबसे दाहिना भाग यानि "com" इस वेब ठिकाने के प्रकार को बताता है। इस समय लगभग आठ प्रकार के डोमेन प्रयोग हो रहे हैं, लेकिन इंटरनेट से लगातार जुड़े रहे लोगों की भीड़ को देखते हुए सात नये प्रकार के डोमेन जोड़े गये हैं। (इन सभी की सूची हम सबसे अंत में दे रहे हैं।) बीच का भाग यानि "abc" इस पते के मालिक संस्थान को दर्शाता है और सबसे बायां हिस्सा यानी www इस वेब ठिकाने के मेजबान का नाम है। किसी भी संस्थान को मुख्य नाम तथा डोमेन नाम प्रदान करने का काम InterNIC नामक संस्थान करता है। जिस तरह इंटरनेट पर सूचनाओं का आदान-प्रदान टुकड़ो में तथा विभिन्न कम्प्यूटरों से होकर होता है, उसी तरह इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर डोमेन नाम को आई.पी. पते के रूप में बदलते हैं। हर वेब ठिकाने पर एक डोमेन नाम सर्वर होता है, जो कुछ डोमेन नामों का आई. पी. पता जानता है या कुछ अन्य डोमेन नाम सर्वरों का पता जानता है। जब भी आप अपने कम्प्यूटर द्वारा किसी वेब ठिकाने पर पहुंचना चाहते हैं तो आपका कम्प्यूटर डोमेन नाम को आई. पी. पते में बदलता है। इस प्रक्रिया में कुछ समय लगता है। एक बार आपके कम्प्यूटर को आई.पी. पता मिल जाता है तो वह उस आई.पी. पते वाले कम्प्यूटर को ढूंढ निकालता है। लेकिन इससे पहले कि उस कम्प्यूटर पर मौजूद जानकारी आपके कम्प्यूटर पर पहुंचे, दोनों कम्प्यूटर आपस में कुछ बातचीत करते हैं। ठीक उसी तरह जैसे जब दो इंसान आपस में मिलते हैं तो एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। आम तौर पर अगर आप इंटरनेट से सीधे जुड़े हैं तो यह प्रक्रिया आधे सेकंड का समय लेगी। अगर आप किसी इंटरनेट सेवा प्रदाता जैसे वी.एस.एन.एल. द्वारा इंटरनेट से जुड़े हैं तो आपको कुछ अधिक समय लगेगा। अब दोनों कम्प्यूटरों की आपसी बातचीत के बाद आपका कम्प्यूटर दूसरे कम्प्यूटर से आकड़ा प्राप्त करना आरंभ कर देगा और सारे आकड़े हासिल होने के बाद आप उसे देख सकते हैं, अपने कम्प्यूटर पर संग्रह कर सकते हैं या चाहें तो उसको प्रिंट भी कर सकते हैं। पूरे आंकड़े मिलने में लगने वाला समय वेब पेज के डिजाइन पर निर्भर करता है। अगर वेब पेज पर शब्दों के साथ रेखाचित्र भी है तो यह समय बढ़ जाएगा।

अगर किसी कारणवश आपका कम्प्यूटर आपके इच्छित ठिकाने का आई. पी. पता नही ढूंढ पाता तो यह आपको ''डोमेन नाम सेवा में दर्ज नहीं (DNS Entry Not Found)'' संदेश दे देगा।

डोमेन नाम	क्या दर्शाता है?
.com	व्यापारिक संगठन
.net	कोई नेटवर्क
.int	अंतरराष्ट्रीय संस्थान
.org	गैर सरकारी संस्थान
.edu	शैक्षणिक संस्थान
.mil	अमेरिकी मिलीटरी संस्थान
.gov	अमेरिकी सरकारी संस्थान
.in,.au,.nz	किसी देश विशेष का डोमेन
नये डोमेन नाम	
.firm	व्यापारिक-व्यवसायिक संगठन
.store	विक्रय केन्द्र
.web	इंटरनेट से संबंधित
.arts	कला से संबंधित
.rec	मनोरंजन से संबंधित
.info	सूचना देने वाले संगठन
.nom	व्यक्तिगत विशेषता को दर्शाने वाला।

इंटरनेट
कुछ आश्चर्यजनक तथ्य

- अमेरिका में करीब 3 करोड़ इंटरनेट उपयोक्ता हैं और सन 2000 तक अमेरिका की कुल आबादी का आधा भाग इंटरनेट से जुड़ा होगा।
- इंटरनेट करीब 100 देशों से एक्सेस किया जा सकता है एवं पूरी दुनिया में करीब 10 लाख वेब सर्वर मौजूद हैं।
- एक औसत वेब पेज पर करीब 500 शब्द होते हैं। एक अनुमान के अनुसार इस समय इंटरनेट पर करीब तीन से पांच करोड़ वेब पेज मौजूद हैं।
- एक औसत इंटरनेट उपयोक्ता 35.2 वर्ष का है।

कम्प्यूटर उपयोक्ताओं की मुश्किल आसान

तकनीकी जगत में नित नये बदलाव आते रहते हैं और तकनीकी जगत के एक मूल आधार कम्प्यूटर जगत में तो हर पल बदलाव आते हैं। कम्प्यूटर उपयोक्ता इस बात से भली भांति परिचित होंगे कि किसी भी सॉफ्टवेयर का नया संस्करण हर कुछ दिन बाद देखने को मिल जाता है। ऐसे में उपयोक्ता के सामने दिक्कत यह रहती है कि इन नये संस्करणों को कैसे हासिल किया जाय। इसका जवाब है इंटरनेट। सॉफ्टवेयर बनाने वाली कंपनियां अपने सॉफ्टवेयर के नये संस्करणों को, अपने वेब ठिकाने से, डाउन लोड करने की सुविधा उपयोक्ता को देती है। लेकिन इसमें भी दिक्कत यह है कि जब तक उपयोक्ता विभिन्न सॉफ्टवेयर कंपनियों के वेब ठिकानों से नये संस्करणों की जानकारी हासिल करके उन्हें डाउन लोड करने का मन बनाता है, तब तक कई अन्य सॉफ्टवेयर्स के नये संस्करण निकल आते हैं और उपयोक्ता की सारी मेहनत बेकार हो जाती है। यह प्रक्रिया न खत्म होने वाले, एक खेल की तरह चलती रहती है।

उपयोक्ताओं को इस मुसीबत से बचाने के लिये एक नया सॉफ्टवेयर आया है। यह सॉफ्टवेयर, उपयोक्ता के कम्प्यूटर पर मौजूद सभी सॉफ्टवेयर की लिस्ट बना लेता हैं और जब भी उपयोक्ता इंटरनेट से जुड़ता है तो यह सॉफ्टवेयर इंटरनेट से ढूंढकर नये उपलब्ध संस्करणों की लिस्ट उपयोक्ता को पेश कर देता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह सॉफ्टवेयर, इंटरनेट से मुफ्त में हासिल किया जा सकता है। इस सॉफ्टवेयर का नाम है catchup और इसको हासिल करने के लिये आपको http://www.managea ble.com पर जाना होगा।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट का मालिक कौन

अब तक आप जान चुके हैं कि इंटरनेट क्या है? यह कैसे काम करता है? इंटरनेट पर आप अपना समय कैसे बिता सकते हैं तथा किसी भी वेब ठिकाने के पीछे क्या रहस्य छुपा होता है? इतनी चीजों को जान लेने के बाद कुछ लोगों के मन में यह विचार जरूर आया होगा कि इंटरनेट का मालिक धीरू भाई अंबानी या बिल गेट्स की तरह बहुत बड़ा धनवान होगा। आइये देखें कौन है इंटरनेट का मालिक?

सूचना संपदा के इतने विशाल भंडार का कोई मालिक नहीं!! आश्चर्य की बात है लेकिन सत्य है। इंटरनेट वास्तव में पहला ऐसा माध्यम है जो सही रूप में अभिव्यक्ति की आजादी देता है और इसका कारण सिर्फ यही है कोई भी इसका मालिक नहीं है। कंप्यूटरी दुनिया के बेताज बादशाह बिल गेट्स को इसका अफसोस जरूर होगा, लेकिन वह भी कुछ नहीं कर सकते। इंटरनेट किसी एक व्यक्ति या संस्था की बपौती नही है। बल्कि हजारों लाखों क्षेत्रीय नेटवर्क और सेवा प्रदाता आपस में संपर्क करके सूचना का आदान-प्रदान करते हैं। ये नेटवर्क कुछ सरकारी संस्थाओं (जैसे VSNL) और दूरसंचार कंपनियों की संपत्ति हो सकते हैं।

फिर ये नेटवर्क आपस में कैसे सांमजस्य स्थापित करते हैं? इसका एक अच्छा उदाहरण हमारी टेलीफोन व्यवस्था हैं। अगर आपके पास टेलीफोन है तो उसका कनेक्शन आपने किसी क्षेत्रीय टेलीफोन सेवा प्रदाता से लिया होगा। जब आप कोई लोकल फोन नं. डायल करते हैं, तो जो भी आप कहते हैं या सुनते हैं वह टेलीफोन कंपनी के क्षेत्रीय नेटवर्क से होकर दूसरी तरफ पहुंचती है। दूसरी तरफ जब आप दूसरे राज्य या देश का कोई टेलीफोन नं डायल करते हैं, तो आपकी बातचीत, आपकी टेलीफोन कंपनी के नेटवर्क से लंबी दूरी के सेवा प्रदाता के नेटवर्क तक पहुंचती है। लंबी दूरी के सेवा प्रदाता का नेटवर्क आपकी बातचीत को आपकी वांछित जगह के क्षेत्रीय प्रदाता के नेटवर्क तक पहुंचा देता है।

इंटरनेट पर भी इसी तरह काम होता है, सिर्फ दो बातों के अलावा। पहली चीज आपको लंबी दूरी तक कोई सूचना भेजने के लिये अलग से कुछ नही देना पड़ता। अत: आप इंटरनेट पर अपना समय या तो पड़ोसी के कम्प्यूटर से जुड़कर बिताये या अपने किसी विदेशी मित्र के कम्प्यूटर से जुड़कर, आपको एक ही फीस अदा करनी पड़ेगी। दूसरी चीज, कोई भी अपना नेटवर्क बनाकर इंटरनेट से जोड़ सकता है। कोई रोक टोक करने वाला नही होगा।

अब सवाल उठता है कि अगर सड़क पर ट्रैफिक लाइट न हो तो वाहन चलाना मुश्किल हो जाता है, फिर इंटरनेट पर सूचनाओं के ट्रैफिक को कौन कंट्रोल करता है? तो इसमें कुछ संस्थाओं का योगदान है, जो इंटरनेट के लिये नियम कानून बनाते हैं। वी.एस.एन.एल. जैसे सेवा प्रदाता इंटरनेट की रीढ़ की हड्डी या बैकबोन का काम करते हैं। नेशनल साईंस फाउंडेशन (NSF) ने इंटरनेट को इसकी वर्तमान साज सज्जा और रंग रूप तक पहुंचाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। NSF द्वारा प्रायोजित इंटरनेट नेटवर्क इंफार्मेशन सेंटर (Inter NIC), IP पते प्रदान करने और पंजीकृत करने का काम करती है. यह संस्था एक डाटा बेस का भी रख रखाव करती है, जिसे कोई भी व्यक्ति, इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटरों और उपयोक्ताओं के बारे में जानकारी लेने के लिए प्रयोग कर सकता है। इंटरनेट सोसायटी (ISOC) तथा इंटरनेट इंजीनियरिंग टास्क फोर्स (IETF), इंटरनेट के काम करने के लिये नियम (Protocol) बनाती है। इनमें से कुछ नियम सभी वेब ठिकानों को मानने जरूरी है, जबकि कुछ सिर्फ मार्ग दर्शन, प्रस्ताव या टिप्पणी के रूप में होते हैं। उदाहरण के लिये नियम 822 ई-मेल संदेश के शीर्षक भाग को समरूप बनाने के लिये है और सभी ई-मेल सेवा प्रदाता इसका पालन करते हैं। किसी भी वेब ठिकाने पर क्या सूचना मौजूद है, इसको कोई नियंत्रित नहीं कर सकता, सिवाय उस वेब ठिकाने के मालिक के।

इंटरनेट से बढ़ता अकेलापन

क्या आप बता सकते हैं कि इंटरनेट का किसी उपयोक्ता की सोशल जिंदगी पर क्या असर पड़ता है? हाल ही में इस विषय पर किये गये पहले अध्ययन के नतीजे सामने आये हैं। इन नतीजों से पता चलता है कि इंटरनेट के प्रयोग से उपयोक्ता हतोत्साहित हो जाते हैं तथा उनकी सोशल लाईफ का ढांचा भी चरमराने लगता है। हालांकि इंटरनेट का उपयोग एक दूसरे से संपर्क साधने के लिये होता है, लेकिन यह आमने-सामने की बातचीत के अवसर कम करता है और इंटरनेट उपयोक्ता एकाकी हो जाता है। इस अध्ययन के अंतर्गत इटंरनेट विहीन 169 लोगों को मुफ्त कम्प्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन दिये गये तथा एक विशेष सॉफ्टवेयर के प्रयोग द्वारा सभी 169 लोगों द्वारा इंटरनेट पर बिताये गये समय का पूरा ब्यौरा रखा गया। बाद में इन लोगों के साक्षात्कार में यह बात सामने आयी कि इंटरनेट का उपयोग शुरू करने के बाद परिवार के लोगों एवं दोस्तों से उनकी बातचीत कम हो गई तथा उनमें एकाकीपन की भावना बढ़ गई।

यह अध्ययन कारनेगी मेलोन विश्वविद्यालय, पिट्सबर्ग की एक टीम ने किया था।

ई-मेल की जगह लेगा अब वीडियो ई-मेल

जौनपुर, उत्तर प्रदेश का एक छोटा सा पब्लिक टेलीफोन बूथ। कंप्यूटर स्क्रीन के सामने खड़ी एक ग्रामीण महिला। आंखों में खुशी के आंसु और गालों पर शर्म की लाली। यह किसी हिंदी पिक्चर का नही बल्कि असली जिंदगी का एक दृश्य है। नेशनल एसोशिएशन ऑफ साफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज (नेसकॉम) ने हाल ही में एक सॉफ्टवेयर विकसित किया है, जो व्यवसायिक वीडियो ई-मेल के लिये प्रयोग किया जायेगा।

तीन मिनट के वीडियो ई-मेल संदेश का खर्चा सिर्फ पंद्रह रुपये आयेगा और इस तरह यह उन लोगों के लिये बहुत उपयोगी होगा, जो दूर दराज के गांवों से बड़े शहरों में रोजी रोटी की तलाश में आये हुए हैं। ऐसे लोगों को अपना संदेश डाक विभाग के द्वारा भेजना पड़ता है, जिसमें कई दिन लग जाते हैं और वे अपने गांव भी साल में एक या दो बार ही जा पाते हैं।

अब वीडियो ई-मेल सेवा, जो कुछ महीनों में देश के कई पब्लिक बूथ में उपलब्ध होगी, द्वारा भाषा का कोई गतिरोध नही रह जाएगा। नेसकॉम ने इस सेवा के परीक्षण के लिये मुंबई के 18 टैक्सी ड्राइवर को बुलाया जो जौनपुर के रहने वाले हैं और उन्होंने अपने परिवार वालों के लिये संदेश रिकार्ड कराये। चमेली देवी को अपने पति का संदेश प्राप्त करके इस सेवा का उद्घाटन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चमेली, जो खेतों में काम करती है और कंप्यूटर तथा ई-मेल के बारे में कुछ नहीं जानती, ने बूथ ऑपरेटर को पांच रुपये दिये ताकि वह उसके पति का संदेश कम्प्यूटर पर संग्रह कर ले। गरीब और अशिक्षित गांव वालों, जिनके पास टेलीफोन की सुविधा नही तथा जो चिट्ठी लिखना या पढ़ना नही जानते, अब इन टेलीफोन बूथों में अपना संदेश रिकार्ड कराकर अपने संबंधियों को भेज सकेंगे।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट : जेब पर कितना भारी?

पिछले अंक तक आप इंटरनेट की बुनियादी तकनीक पढ़ते रहे हैं। कुछ लोग इंटरनेट सुविधा का लाभ भी उठाना चाहते हैं। लेकिन कुछ लोगों के मन में अभी भी सशंय हैं, वे जानना चाहते हैं कि इंटरनेट से जुड़ने के लिये कितना रुपया खर्चा करना पड़ेगा? तो आइये हम आपको इस बारे में विस्तृत जानकारी दें।

इंटरनेट से जुड़ने के लिये सबसे पहले आप के पास होना चाहिये एक कम्प्यूटर, एक टेलीफोन कनेक्शन और एक मोडेम, जो आपके कम्प्यूटर को टेलीफोन लाइन से जोड़ने का काम करेगा। अब आपको जरूरत है इंटरनेट कनेक्शन की, तो इसके लिये आपको क्षेत्रीय दूरसंचार विभाग से संपर्क करके आवेदन देना होगा और फिर जैसे ही आपको इंटरनेट कनेक्शन मिलेंगा, आप फौरन इंटरनेट से जुड़ सकते हैं।

इंटरनेट एकाउंट दो तरह के होते हैं. पहला शेल (Shell) एकाउंट जिस पर सिर्फ शब्दों की सुविधा है। दूसरा TCP/IP जिस पर अक्षरों के साथ रेखाचित्र, आवाज आदि सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

शेल एकाउंट के लिये 500 घंटों का कनेक्शन 5000/- रुपये में उपलब्ध है, इसके अलावा 500/- रुपये पंजीकरण के लगते हैं। TC/IP के लिये तीन तरह के विकल्प उपलब्ध हैं।

- ❖ 100 घंटों के लिये 3000/-
- ❖ 250 घंटों के लिये 6500/-
- ❖ 500 घंटों के लिये 10,000/-

इसके अलावा 500/- रुपये पंजीकरण के लिये अलग से देने पड़ते हैं। छात्रों को विशेष छुट के रुप में शेल एकाउंट की सुविधा सिर्फ 500 रुपये में उपलब्ध है। तथा उनके लिये पंजीकरण शुल्क भी सिर्फ 50/- रुपये है। TCP/IP एकाउंट में किसी तरह की छुट छात्रों को उपलब्ध नही है। इंटरनेट कनेक्शन के लिये आप वी.एस.एन.एल. (विदेश संचार निगम लिमिटेड) को पैसा देते हैं। इसके अलावा उतनी ही देर का टेलीफोन बिल भी आपको अदा करना पड़ता है, जितनी देर आप इंटरनेट से जुड़े रहते हैं। भारत में टेलीफोन सेवा और इंटरनेट सेवा की मौजूदा हालत को देखते हुए कम से कम डेढ़ गुना ज्यादा समय का टेलीफोन बिल आपको जोड़ना चाहिये। इस तरह अगर आप 100 घंटो का TCP/IP एकाउंट लेते हैं तो आपको 3500/- रुपये (3000/- + 500/-) इंटरनेट कनेक्शन के लिये अदा करने पड़ेंगे। तथा 100 x 1.5 यानि 150 घंटो का टेलीफोन बिल, (150 घंटे = 9000 मिनट यानी 3000 कॉल) करीब चार हजार रुपये, भी आपको अदा करने पड़ेंगे। ये कनेक्शन डायल-अप सर्विस कहलाते हैं। इसके अलावा लीज्ड लाईन की भी सुविधा उपलब्ध हैं। लेकिन इसका खर्चा लाखों रुपये होता है, अत: इस तरह का कनेक्शन व्यवसायिक संस्थाओं, शैक्षणिक संस्थाओं आदि के लिये ही उपयुक्त है।

वायरस और इंटरनेट

इंटरनेट के जहां अनगिनत फायदे हैं, वहीं कुछ नुकसान भी हैं। इन्हीं कुछ नुकसानों में से एक है 'कम्प्यूटर वायरस'।

वायरस का नाम सुनते ही कम्प्यूटर उपयोक्ताओं को कपंकपी आ जाती है। इंटरनेट के व्यापक प्रयोग की शुरूआत से पहले वायरस फैलने का कारण मुख्यत: नकली सॉफ्टवेयर तथा कम्प्यूटर गेम्स थे तथा माध्यम था फ्लॉपी, जिन पर कॉपी करके ये नकली सॉफ्टवेयर तथा कम्प्यूटर गेम्स एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर डाले जाते थे। आज की तारीख में वायरस फैलने का माध्यम बदल गया है। अब वायरस फैलने का मुख्य माध्यम है इंटरनेट।

26 अप्रैल को फैलने वाला *चेरनोबिल* वायरस भी इंटरनेट के द्वारा ही फैला था। इंटरनेट के द्वारा फैलने वाले विभिन्न खतरनाक वायरस की सूची में सबसे पहला नाम है *मेलीसा* का। यह वायरस इंटरनेट उपयोक्ता से ज्यादा इंटरनेट सेवा प्रदाताओं के लिये खतरनाक था। इस वायरस की खासियत थी कि यह इंटरनेट उपयोक्ता के कम्प्यूटर पर मौजूद ई-मेल डायरेक्ट्री से विभिन्न ई-मेल पते चुराकर उन्हें अशलील वेब ठिकानों की लिस्ट भेज देता था। इस मेल को पाने वाले लोग जैसे ही इस ई-मेल को खोलते थे *मेलीसा* वायरस, उनके कम्प्यूटर पर मौजूद डायरेक्ट्री में से आंकड़े चुराकर, अपना काम कर जाता था।

इस वायरस की वजह से कई इंटरनेट सेवा प्रदाताओं के ई-मेल सर्वर फेल हो गये थे। इस सूची में दूसरा नाम है *चेरनोबिल* वायरस का। विशेषज्ञों के अनुसार इंटरनेट द्वारा फैलने वाले सभी वायरसों में सबसे ज्यादा तबाही इसी वायरस ने फैलायी है। ताजा जानकारी के अनुसार अब एक और खतरनाक वायरस इंटरनेट के द्वारा फैल रहा है। यह वायरस ई-मेल के साथ जुड़ी हुई फाइल के रूप में आता है। यह ई-मेल आपके किसी जान पहचान के व्यक्ति द्वारा भेजी गयी प्रतीत होगी, लेकिन जैसे ही आप ई-मेल से जुड़ी हुई फाइल खोलेंगे, आपके कम्प्यूटर पर मौजूद सभी आंकड़े नष्ट हो जायेंगे। इस वायरस का नाम है Happy99।

तो अगली बार जब भी आप इंटरनेट से जुड़े और आपको कोई ऐसी ई-मेल मिले, जिसे किसी अनजान व्यक्ति ने भेजा हो तो उसे तुरंत डिलीट कर दें। किसी ई-मेल के साथ अगर आपको Happy99.exe फाईल जुड़ी हुई मिले तो उसे भी तुरंत डिलीट कर दें, वर्ना आपको अपने कम्प्यूटर पर मौजूद आंकड़े ढूंढने से भी नही मिलेंगे।

सवाल आपके जवाब हमारे

● कृपया बतायें कि क्या इंटरनेट के द्वारा हिंदी में संदेश भेज सकते हैं? अगर हां तो कैसे? और ना तो क्यों?

राजू कच्छप, रांची.

इंटरनेट के द्वारा हिंदी में संदेश भेजा जा सकता है एवं इसके लिये कोई विशेष प्रक्रिया नही है। जैसे आप अंग्रेजी में संदेश भेजते हैं, ठीक उसी तरह हिंदी में भी संदेश भेज सकते है। लेकिन संदेश पाने वाला उसे पढ़ सके, इसके लिए जरुरी है कि उसके कम्प्यूटर पर भी वह फांट डला हुआ हो, जिसका इस्तेमाल आपने अपने संदेश को टाइप करने के लिये किया है।

● इंटरनेट से एक समान्य विद्यार्थी कैसे लाभ उठा सकता है।

शंकर कुमार, चक्रधरपुर

इंटरनेट से जुड़ने के लिये आपके पास कम्प्यूटर, मोडम, टेलीफोन कनेक्शन और इंटरनेट कनेक्शन होना जरूरी है। इंटरनेट से विद्यार्थी किसी विषय पर ताजा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कुछ देशी तथा विदेशी शिक्षण संस्थान इंटरनेट के द्वारा अपने पाठ्यक्रम भी चला रहे हैं। अगर आप रांची या भारत से बाहर जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो विभिन्न शिक्षण संस्थानों में भर्ती की विधि, संस्थान द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों की जानकारी, एडमिशन फार्म, आदि कई जानकारियां आप इंटरनेट द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट फोन : कम खर्च में विदेशों में बातचीत

रांची से दिल्ली, दस मिनट के लिये टेलीफोन पर बातचीत का खर्च, और दोनों जगह के बीच ट्रेन की यात्रा का खर्च एक ही होगा। जबकि उतनी ही देर के लिये, इंटरनेट फोन द्वारा रांची से पेरिस बातचीत करने का खर्च मेन रोड से हटिया तक ऑटो रिक्शा के भाड़े के बराबर होगा। इतने कम खर्च में सिर्फ फोन द्वारा बातचीत ही नहीं, बल्कि फैक्स सदेंशों का आदान-प्रदान भी संभव है. तो क्या हर वह व्यक्ति जो इंटरनेट से जुड़ा है, इंटरनेट फोन का लाभ उठा रहा है?

जी नहीं, भारत में आप इंटरनेट फोन का प्रयोग नही कर सकते!! क्योंकि विदेश संचार निगम लिमिटेड ने इसे गैर कानूनी घोषित कर दिया है। साधारण सी बात है, अगर लोग इंटरनेट फोन का प्रयोग करने लगे तो वी.एस.एन.एल. की कमाई (जो मुख्यत: देश के बाहर की जाने वाली टेलीफोन बातचीत से होती है) का ग्रॉफ एकदम नीचे लुढ़क जाएगा।

इसके बावजूद दिल्ली और मुंबई के कई इलाकों में STD / ISD बूथ वाले इसका प्रयोग करके न सिर्फ अंधाधुंध कमाई कर रहे हैं, बल्कि सरकार को भी लाखों रुपये का चूना लगा रहे हैं। व्यवसायिक ही नहीं व्यक्तिगत तौर पर भी कई उपयोक्ता इसका प्रयोग कर रहे हैं। इंटरनेट फोन किसी खास तरह का फोन नही बल्कि एक सॉफ्टवेयर है और इसका उपयोग करने के लिए आपको कम्प्यूटर, मोडम और इंटरनेट कनेक्शन की जरूरत है। इंटरनेट टेलीफोन सॉफ्टवेयर दिल्ली और मुंबई के कई कम्प्यूटर विक्रेताओं के पास खुलेआम उपलब्ध है। इसकी कीमत दो से तीन हजार रुपये के बीच है। इंटरनेट पर भी इस तरह के कुछ सॉफ्टवेयर मुफ्त में उपलब्ध हैं। कोई यह सोचे कि जब उसके पास इंटरनेट कनेक्शन है तो फोन क्यों करें? ई-मेल से काम न चलायें। तो जनाब, चिट्ठी पढ़ने और लिखने में वह मजा कहां जो एक-दूसरे से बातें करने में है।

जहां तक वी.एस.एन.एल. द्वारा इंटरनेट टेलीफोन को गैर कानूनी घोषित करने का सवाल है, कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि इंटरनेट पर आवाज भी डिजिटल रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचती है। अत: आवाज और डाटा में फर्क करना मुश्किल होता है और यही कारण है कि अधिकारिक तौर पर अभी तक कोई भी इंटरनेट टेलीफोन उपयोक्ता वी.एस.एन.एल. की पकड़ में नही आया है।

भारत में वी.एस.एन.एल अपने लाभ को बरकरार रखने के लिये चाहे कितनी हाय तौबा कर ले, लेकिन इंटरनेट टेलीफोन पर पुरी तरह नियत्रंण नही कर सकता। दूसरी ओर भारत से बाहर के कुछ देशों में, इस तकनीक का प्रयोग कर कई कंपनियां न सिर्फ अपने उपयोक्ताओं को सस्ती और अच्छी सेवा मुहैया करा रही है, वरन् अपने लाभ में वृद्धि भी दर्ज कर रही हैं।

महिलाएं आगे या पुरूष

इंटरनेट से करोड़ों लोग जुड़े हैं, जिनमें महिला और पुरुष दोनों शामिल हैं। लेकिन इंटरनेट पर महिलाओं और पुरुषों की रूचि में भारी अंतर है। एक अध्ययन से पता चला है कि पुरुष इंटरनेट पर खेल समाचारों की जानकारी हासिल करने में महिलाओं से काफी आगे हैं। दूसरी ओर महिलायें किसी विषय या घटना के ऊपर शोध करने में पुरुषों से आगे है। महिलाओं और पुरुषों की इंटरनेट पर विभिन्न विषयों में रूचि का प्रतिशत निम्न प्रकार से है:-

विषय	महिला	पुरुष
- किसी विषय या घटना पर शोध	89%	83%
- उत्पादों या सेवाओं के बारे में जानकारी लेना	69%	78%
- मौसम संबंधी या अन्य सामाचारों की जानकारी लेना	60%	64%
- किसी कार्य को करने संबंधी सहायता के बारे में जानकारी लेना	46%	54%
- सॉफ्टवेयर प्राप्त करना	39%	53%
- खेल समाचारों की जानकारी लेना	28%	48%
- कम्प्यूटर तथा संबंधित उत्पादों के बारे में शोध	22%	41%
- ऑटोमोबाईल के बारे में जानकारी लेना	27%	40%
- इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों के बारे में जानकारी लेना	16%	37%
- नौकरी के बारे में जानकारी हासिल करना	28%	33%
- शेयर, म्यूचअल फंड आदि के वर्तमान कीमतों की जानकारी हासिल करना	16%	31%
- उत्पाद या सेवाएँ खरीदना	22%	26%
- क्षेत्रीय समुदाय के बारे में शोध	27%	22%
- केवल वयस्कों के लिये सामग्री प्राप्त करना	05%	21%
- खेल खेलना	24%	21%
- कपड़ों के बारे में जानकारी लेना	15%	10%
- शेयर आदि खरीदना	03%	06%

टेंडर की जानकारी इंटरनेट से

ताकत की कुंजी है सूचना और व्यापार में सूचना का महत्वपूर्ण स्थान है। विदेशीयों और भारतीयों के लिये भारत के व्यापार से संबंधित सूचनाओं का विशाल स्त्रोत इंटरनेट के एक वेब ठिकाने पर उपलब्ध है। इस ठिकाने पर भारतीय अर्थव्यवस्था, सरकारी नीतियों, संबंधित नियम कानून आदि पर महत्वपूर्ण आंकड़े उपलब्ध हैं। इसके अलावा अनिवासी भारतीयों और कंपनियों के लिये भारत में कहां-कहां निवेश के अवसर उपलब्ध हैं एवं छोटे, बड़े और मध्यम आकार के निर्माता, आयात-निर्यात में लगी कंपनियों आदि की विस्तृत जानकारी के साथ-साथ भारतीय विज्ञापन, जन संपर्क, मीडिया एजेंसीयों के बारे में जानकारी भी आपको यहां से मिल सकती है। बेरोजगार या ऐसे लोग, जो वर्तमान कंपनी छोड़कर नयी कंपनी में जाना चाहते हैं, के लिए भारत तथा कुछ अन्य देशों में उपलब्ध रोजगार की जानकारी भी आपको यहां से मिल सकती है।

लेकिन इस ठिकाने की सबसे बड़ी विशेषता है, इस पर मौजूद निविदा (टेंडर) सूचनाएं। सरकारी, गैर सरकारी सभी तरह के निविदा जो सामान, सेवा या तकनीक की खरीद-बिक्री से संबंधित है, की जानकारी यह वेब ठिकाना आपको उपलब्ध कराता है। इस वेब ठिकाने पर 60,000 उत्पादों के करीब दस लाख आपूर्तिकर्ताओं से संबंधित विवरण उपलब्ध है। इतनी जानकारियां उपलब्ध कराने वाली कंपनी का नाम है टेंडर इंफोनेट लिमिटेड और इसका वेब ठिकाना है www.indiatrade.com।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट का नशा शराब और सिगरेट से ज्यादा बुरा

व्यापार हो या नौकरी, घरेलू जीवन हो या सामाजिक, सूचना हर क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तथ्य को नज़रअंदाज करके सफलता हासिल करना नामुमकिन है। शायद यही वजह है कि इंटरनेट, अब तक के सबसे शक्तिशाली सूचना माध्यम के रूप में उभरा है। जल्दी ही इंटरनेट, रेडियो और टेलीविजन की तरह घर-घर में अपना स्थान बना लेगा।

विदेशों के मुकाबले, भारत में इंटरनेट देर से आया और लोग इसे अपनाने में अभी भी हिचक रहे हैं। फिल्मी दुनिया के लोग भी इसका अपवाद नही हैं। कुछ गिने चुने लोगों को छोड़कर बाकी फिल्मवाले इंटरनेट का महत्व नहीं समझ पा रहे हैं। चाहे वितरण का मामला हो या पब्लिसिटी का, इंटरनेट कम खर्च में अच्छे परिणाम देने वाला एक बेहतरीन माध्यम साबित हो सकता है। इस तथ्य को स्वीकार करने में फिल्मवालों को कुछ समय और लगेगा।

इतनी उहापोह के बीच अगर कोई फिल्मवाला ऐसा मिले, जो इंटरनेट की दुनिया में भी एक जानी मानी हस्ती हो तो आश्चर्य ही होगा। लेकिन सच तो सच है और इस हस्ती का नाम है शम्मी कपूर। अपने लटकों-झटकों के लिये मशहूर इस अभिनेता के बारे में शायद ही कुछ लोगों को यह मालूम होगा कि शम्मी कपूर, उन कुछ भारतीय लोगों में से एक है जो भारत में इंटरनेट के शुरूआती दिनों से ही इससे जुड़े हैं और वर्तमान में वे इंटरनेट यूजर्स क्लब ऑफ इंडिया के चैयरमैन भी हैं। शम्मी कपूर का कम्प्यूटर से परिचय उनकी भतीजी रितु नंदा ने 1988 में कराया था और वे इससे इतना प्रभावित हुए कि कुछ समय बाद *अजूबा* फिल्म की शूटिंग के लिये मास्को गये तो वहां से कुछ साफ्टवेयर खरीद लाये, जबकि कम्प्यूटर उन्होंने वापस भारत लौटकर खरीदा। शम्मी ने कम्प्यूटर के बारे में सब कुछ खुद ही सीखा और परिणाम यह रहा कि जिस रुइया कॉलेज से उन्हें निकाल दिया गया था, उसी कॉलेज के कम्प्यूटर विभाग का उद्घाटन करने के लिये उन्हें आमंत्रित किया गया।

पिछले दस सालों में शम्मी का कम्प्यूटर से लगाव इतना बढ़ गया कि उन्हें परिवार वालों से कई तरह की बातें सुनने को मिली। वह रोजाना चौदह से सोलह घंटे अपने कम्प्यूटर पर बिताते थे। कम्प्यूटर की वजह से ही उन्होंने धूम्रपान भी छोड़ दिया। कम्प्यूटर और इंटरनेट का इतना जबरदस्त नशा उन्हें चढ़ा कि उन्होने शराब पीना भी कम कर दिया।

इंटरनेट बिलिंग : पर्यावरण को फायदा

दफ्तरों में कम्प्यूटर लगने के बाद कुछ लोगों ने यह परिकल्पना की थी कि अब कागज़ के प्रयोग में कमी आयेगी। इस परिकल्पना को पेपर रहित दफ्तर का नाम दिया गया। यह परिकल्पना अभी तक पूरी तरह से मूर्त रूप नहीं ले पायी है। विश्व भर में कुछ ही कंपनियां या दफ्तर ऐसे हैं, जो पूरी तरह से इस परिकल्पना को साकार कर पाये हैं। निश्चित ही इससे कागज़ के प्रयोग में कमी हुई है। विदेशों में कुछ कंपनियां (जिनमें बैंक, क्रेडिट कार्ड कंपनियां आदि भी शामिल हैं) अपने ग्राहकों को डाक के बजाय इंटरनेट द्वारा बिल भेजने लगी हैं। इंटरनेट से जुड़कर अपने कम्प्यूटर की स्क्रीन पर बिल देखिये और इंटरनेट द्वारा ही उसकी अदायगी भी अपने बैंक खाते से कर दीजिये। कंपनी को बिल प्रिंट करने, लिफाफे में भरने और पोस्ट ऑफिस तक पहुंचाने के झंझट से मुक्ति मिली। आपको चेक बुक में प्रविष्टि करने, चेक लिफाफे में डालकर डाक टिकट चिपकाने और पोस्ट ऑफिस तक पहुंचाने की सिरदर्दी से छुटकारा मिला। डाकघर और डाकिये का भी कुछ बोझ हल्का हुआ। कुछ कागज़ की भी बचत हुई। साथ ही बिल आपको देर से मिलने या कंपनी को भुगतान देर से मिलने की सूरत में होने वाले जुर्माने या अनावश्यक वाद-विवाद का भी कोई भय नहीं रहा। इन फायदों के अलावा कुछ और भी फायदे हैं इटरनेट बिलिंग के:-

- आपको बिल फाइलों में सजों कर रखने की आवश्यकता नहीं रहेगी।
- इंटरनेट बिल, पेपर बिल की तरह बेजान नही होंगे। उदारहण के लिये आप क्रेडिट कार्ड कंपनी से मिले बिल में किसी एक प्रविष्टि को याद नहीं कर पा रहे। पेपर बिल की सूरत में आपको अपनी फाइलों में संबंधित कागज़ात ढूंढ़ने होंगे। जबकि इंटरनेट बिल की सूरत में आप उस प्रविष्टि पर माउस क्लिक करेंगे तो संबंधित कागज़ात आपकी स्क्रीन पर अपने आप आ जाएंगे।
- कागज़, डाक खर्च आदि कई खर्चों में कमी की वजह से कंपनियां अपने खर्चों में 60 प्रतिशत तक की कटौती कर सकती हैं।

इतने सारे फायदे हैं, इंटरनेट बिलिंग के तो कुछ नुकसान भी जरूर होंगे। लेकिन इस तकनीक को अपनाने वाली कंपनियों में से किसी ने भी अभी तक इसके नुकसान के बारे में कुछ नहीं कहा है। फिर भी इंटरनेट बिलिंग की तकनीक को व्यापक रूप में मान्यता मिलने में अभी कुछ और समय लगेगा क्योंकि यह तकनीक अभी भी पूर्णतया विकसित नहीं हुई है। इसके विकास में माइक्रोसॉफ्ट तथा नेटस्केप जैसी बड़ी कंपनियां लगी हुई हैं तथा ए.टी.एंड.टी. और सिटी बैंक जैसी बड़ी कंपनियां इसे अपनाने में अग्रणी स्थान पर हैं। इंटरनेट बिलिंग का एक फायदेमंद पहलू, जिसके बारे में अभी तक कोई चर्चा नहीं हुई है, है पर्यावरण। इस तकनीक के प्रयोग का परोक्ष रूप से असर पड़ता है कागज़ के प्रयोग पर और कागज़ के प्रयोग का असर होता है पर्यावरण पर। कागज़ का कम प्रयोग यानि कि पर्यावरण को लाभ। उम्मीद है इस तकनीक से पर्यावरणविद् खुश होंगे तथा कोशिश करेंगे कि इस तकनीक को ज्यादा बढ़ावा मिल सकें।

इंटरनेट सेवा का निजीकरण

छ: नवम्बर 1998 का दिन भारत के मौजूदा और भावी इंटरनेट उपयोक्ताओं के लिये खुशी का दिन था। इस दिन वी.एस.एन.एल. का इंटरनेट सेवा प्रदाता के रूप में एकछत्र राज्य खत्म हो गया। प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की घोषणा के अनुसार छ: नवम्बर को महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड तथा दो अन्य कंपनियों को इंटरनेट सेवा का लाइसेंस दे दिया गया है। कई अन्य कपंनियां भी लाइसेंस प्राप्त करने के लिए लाइन में लगी हैं। इंटरनेट सेवा के निजीकरण के बाद इंटरनेट सेवा प्रदाताओं के बीच प्रतियोगिता बढ़ेगी और इसका सीधा फायदा उपयोक्ताओं को होगा। वे कम खर्च पर बेहतर सेवा की उम्मीद कर सकते हैं।

हालांकि बहुत कुछ सरकार की नीतियों पर निर्भर करेगा जैसे इंटरनेट टेलीफोन सेवा आदि लेकिन उम्मीद की जा सकती है कि सरकार का ध्यान इन बातों पर भी जाएगा और उपयोक्ताओं को इंटरनेट का पूरा पूरा फायदा उठाने का अवसर मिल सकेगा।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

राजनीतिक पार्टियां रंगी इंटरनेट के रंग में

चुनाव आयोग द्वारा दीवारों पर नारे लिखने, पोस्टर चिपकाने तथा लाउडस्पीकरों के प्रयोग पर रोक लगाने के बाद राजनीतिक पार्टियां अब मतदाताओं को लुभाने के लिये विभिन्न संचार माध्यमों का सहारा ले रही हैं। इन माध्यमों में प्रमुख है इंटरनेट। आज देश की करीब हर बड़ी राजनीतिक पार्टी इंटरनेट पर मौजूद है। कुछ क्षेत्रीय दल भी इंटरनेट पर अपने वेब ठिकाने बना चुके हैं। कुछ प्रमुख दल, जो इंटरनेट पर अपना वेब ठिकाना बना चुके हैं, हैं भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी, मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी आदि। इनके अलावा क्षेत्रीय दलों में अन्ना द्रमुक, अजेय भारत पार्टी, भारतीय डेमोक्रेटिक पार्टी, शिव सेना तथा तमिल मनिला कांग्रेस इंटरनेट पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। अकाली दल तथा समाजवादी पार्टी के वेब ठिकाने निर्माणाधीन हैं।

अन्नाद्रमुक	www.aiadmk.org
अकाली दल	www.akalidal.org
अजेय भारत पार्टी	www.ajeyabharat.org
भारतीय जनता पार्टी	www.bjp.org
भारतीय डेमोक्रेटिक पार्टी	www.bdp-india.org
मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी	http://wwwdel.vsnl.net.in/cpim
कांग्रेस पार्टी	http://indiancongress.org
समजावादी पार्टी	www.samajwadi-party.org
शिव सेना	www.shivsena.org
तमिल मनीला कांग्रेस	www.tmcmoopanar.org

भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी तथा कम्यूनिस्ट पार्टी के वेब ठिकानों पर अंग्रेजी का प्रयोग हुआ है, जबकि शिव सेना मराठी, अन्नाद्रमुक तमिल और समाजवादी पार्टी हिंदी का भी प्रयोग कर रहे हैं। इन वेब ठिकानों पर पार्टियों के इतिहास, वर्तमान और भविष्य की योजनाएं, चुनावी नारे, सिद्धांत इत्यादि अनेक तरह की जानकारियां उपलब्ध हैं। भारतीय जनता पार्टी के वेब ठिकाने पर तो आप वंदे मातरम् गीत भी सुन सकते हैं।

इंटरनेट पर इन पार्टियों की उपस्थिति, इन्हें कितना फायदा दिला पायेगी, यह तो भविष्य ही बतायेगा। फिलहाल हम तो इतना ही कहेंगे कि भारतीय राजनेता और राजनीतिक पार्टियां अपनी प्रसिद्धि के लिये किसी भी रंग में रंगें जाने से पीछे नही हटने वाले।

अगर आप में से कोई भी पाठकगण अगले चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करने से पहले इन पार्टियों के बारे में पुरी तरह अध्ययन करना चाहते हैं, तो उनकी सुविधा के लिए हम इन पार्टियों के वेब ठिकानों का नाम बता रहे हैं (कृपया बॉक्स देखें)।

आपका पासवर्ड क्या है?

जब से कम्प्यूटर का उपयोग शुरू हुआ है, आंकड़ों की सुरक्षा एक चिंता का विषय बनी हुई है। कम्प्यूटर के बढ़ते उपयोग के साथ यह चिंता और बढ़ती जा रही है। इससे बचाव के लिये कम्प्यूटर उपयोक्ताओं ने पासवर्ड का प्रयोग शुरू किया।

अब इंटरनेट के प्रयोग के साथ पासवर्ड भी उपयोक्ताओं के लिये जी का जंजाल बनते जा रहे हैं। जिस समय कोई भी उपयोक्ता इंटरनेट कनेक्शन लेता है तो उसे इंटरनेट सेवा प्रदाता द्वारा एक पासवर्ड दिया जाता है। इंटरनेट का आनंद उठाते समय उपयोक्ता को कई वेब ठिकानों पर अपना पंजीकरण कराना पड़ता है तथा उन्हें इसके लिये एक पासवर्ड का निर्धारण करना पड़ता है।

कुछ समय बाद पासवर्ड की यह सूची इतनी लंबी हो जाती है कि उसे याद रख पाना उपयोक्ता के लिये कठिन हो जाता है। यही वह समय होता है जब पासवर्ड की यह लंबी लिस्ट उपयोक्ता के जी का जंजाल बन जाती है। इस लंबी लिस्ट को याद रखना भी मुश्किल होता है और इसे कहीं लिख कर रखना भी खतरे से खाली नही होता। इन परेशानियों से बचने के लिये अधिकतर उपयोक्ता पासवर्ड का निर्धारण करते समय अपनी जन्म तिथि, अपना नाम, गाड़ी का नंबर और 5555 अथवा 1234 जैसी क्रम संख्याओं का प्रयोग करते हैं। लेकिन यह और भी ज्यादा खतरनाक होता है। हैकर्स या कम्प्यूटर लुटेरों के लिये इन पासवर्ड को हासिल कर पाना काफी आसान होता है। किसी हैकर को अगर आपके पासवर्ड का पता चल जाय तो वह आपके कम्प्यूटर पर मौजूद किसी भी आंकड़े को देख सकता है, बदल सकता है या मिटा सकता है। इन्हीं खतरों से बचने के लिये हम आपको पासवर्ड संबंधी कुछ करने और न करने योग्य बातों की जानकारी दे रहे हैं।

- अपना पासवर्ड कुछ समय बाद बदलते रहें। अगर आपको इंटरनेट सेवा प्रदाता या किसी वेब ठिकाने द्वारा अस्थायी पासवर्ड मिला हो तो, जितनी जल्दी संभव हो सके, उसे बदल दें।
- अपनी जन्म तिथि, नाम, फोन नं. इत्यादि का प्रयोग पासवर्ड के रूप में न करें। कभी भी 5555 या 1234 जैसी क्रम संख्याओं का प्रयोग अपने पासवर्ड के रूप में न करें।
- जब तक बहुत जरूरी न हो, किसी वेब ठिकाने पर अपने बारे में सूचनाएं न दें।
- पासवर्ड कम से कम आठ अक्षरों का रखें। पासवर्ड में संख्याओं और अक्षरों का मिश्रण (उदाहरण के लिये ZAM 71492) जरूर करें।
- किसी ऐसे ई-मेल संदेश, जिसमें आपका पासवर्ड पूछा गया हो, का जवाब न दें। अपना पासवर्ड किसी को न बतायें।

उपरोक्त सभी सावधानियों के प्रयोग से आप अपने कम्प्यूटर और उस पर मौजूद आंकड़ों के गलत हाथों में पड़ने से काफी हद तक सुरक्षित हो सकते हैं। वरना दुनिया के किसी कोने में बैठे, किसी अनजाने कम्प्यूटर हैकर की कृपा दृष्टि (!) का आप कब शिकार हो जाएं, कह पाना मुश्किल है।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

केबल मोडम : इंटरनेट की दुनिया में नया धमाका

सरकार द्वारा निजी इंटरनेट सेवा प्रदाताओं को लाइसेंस देने की घोषणा से जल्द ही देश में निजी इंटरनेट सेवा प्रदाताओं की भीड़ जमा हो जाएगी जो अधिक तेज गति और कम पैसों में अच्छी इंटरनेट सेवा प्रदान करने की होड़ में लगे होंगे। एक खबर यह भी है कि इंटरनेट सेवा केबल ऑपरेटरों द्वारा भी प्रदान की जाएगी। भारत और भारतवासियों के लिये यह एक नई चीज होगी और इसको शुरू होने में कितना समय लगेगा, अभी नही कहा जा सकता। आइए देखें, केबल ऑपरेटरों द्वारा इंटरनेट सेवा प्रदान किये जाने के पीछे कौन सी तकनीक है। यह कितनी फायदेमंद है और इस सेवा को व्यवहारिक प्रयोग में लाने के लिये क्या करना होगा?

केबल मोडम द्वारा और टेलीफोन मोडम द्वारा इंटरनेट से जुड़ने में मुख्य अंतर है बैंडविड्थ का। टेलीफोन लाइनों द्वारा अधिकतम 56 Kbps की बैंडविड्थ प्राप्त होती है। इससे ज्यादा गति प्राप्त करने के लिये आई.एस.डी.एन. का सहारा लेना पड़ा है जो 128 Kbps तक की बैंडविड्थ दे सकता है। लेकिन आई.एस.डी.एन. लाइन से जुड़ना काफी महंगा सौदा है और इसके उपकरण भी बहुत महंगे होते हैं। व्यवसायिक रूप में और कोई चुनाव उपयोक्ताओं को उपलब्ध नही हैं। ऐसे में ज्यादा तीव्र गति से इंटरनेट से जुड़ने का एक नया उपाय है केबल के द्वारा।

एक मामूली केबल टीवी का तार, जिसको टीवी से जोड़कर आप म्यूजिक एशिया पर गानों का आनंद उठाते हैं या स्टार न्यूज से ताजा खबरें प्राप्त करते हैं, अपने अंदर बैंडविड्थ का विशाल भंडार संजोये हैं। एक को-एक्सियल केबल, जो करीब 100 चैनल के सिगनल प्रवाहित करता है, करीब 660 Mhz की बैंडविड्थ प्रदान कर सकता है। वास्तव में एक केबल ऑपरेटर करीब 300 Mhz या करीब 90 मोडम के बराबर बैंडविथ प्रदान करने की क्षमता रखता है। फाईबर आप्टिक केबल की क्षमता तो इससे कई गुना ज्यादा (करीब 6 Gbps) होती है। यह एक 33.6 Kbps क्षमता वाले मोडम से 2000 गुना ज्यादा क्षमता वाले मोडम के बराबर होगा।

केबल टीवी के इस दिमाग चकरा देने वाली विशाल क्षमता को देखकर कुछ केबल ऑपरेटरों ने केबल द्वारा टेलीफोन को लेकर कुछ प्रयोग किये और उन्हें महसूस हुआ कि इंटरनेट सेवा प्रदान करने का यह एक अच्छा माध्यम हो सकता है।

केबल ऑपरेटर के लिये इंटरनेट डाटा सिर्फ एक और सिंगनल की तरह होगा, जिसे वह अपने केबल दर्शकों के बीच वितरित कर सकता है। दर्शक, केबल की तार को केबल मोडम नामक यंत्र से जोड़ देता है और इसे मोडम से टीवी तथा एक की बोर्ड से जोड़ दिया जाता है, जिससे दर्शक अपनी सुविधानुसार या तो टीवी देख सकता है, या फिर इंटरनेट से जुड़ सकता है। केबल मोडम की शक्ति का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि 28.8 Kbps स्पीड वाले मोडम से जिस फाइल को किसी जगह भेजने में 8 मिनट लगते हैं, आई.एस.डी.एन. के प्रयोग से उसे 2 मिनट में और केबल मोडम के प्रयोग से उसे सिर्फ 8 सेंकड में भेजा जा सकता है।

अमेरिका आदि कुछ देशों में केबल मोडम की व्यवसायिक सेवा काफी दिनों से उपलब्ध है। लेकिन भारत में केबल मोडम प्रयोग में लाना काफी मुश्किल है। इसमें पहली अड़चन है, इसकी कीमत, जो भारत में करीब बीस हजार रुपये से शुरू होगी। दूसरी मुश्किल है कि इसके प्रयोग से एक समय में या तो टीवी देखा जा सकता है या फिर इंटरनेट से जुड़ा जा सकता है। कुछ केबल मोडम जो थोड़े ज्यादा महंगे होते हैं, टीवी और इंटरनेट से एक साथ जुड़ने की सुविधा भी प्रदान करते हैं।

भारत में करीब एक लाख से ज्यादा केबल ऑपरेटर हैं और इनमें से अधिकतर इंटरनेट सेवा प्रदान करने के लिये जरूरी उपकरणों से लैस नही हैं। पहली बात तो ये कि वो जिस केबल का प्रयोग करते हैं, वह निम्न गुणवत्ता वाली होती हैं, जबकि इंटरनेट सेवा प्रदान करने के लिये फाइबर आप्टिक केबल के प्रयोग की जरूरत होगी, जो काफी महंगी होती है और इस तरह करीब 90 प्रतिशत केबल ऑपरेटर इस सेवा को प्रदान करने से पीछे हट जाएंगे। शेष बचे 10 प्रतिशत केबल ऑपरेटर्स में से कुछ बड़े ऑपरेटर जिन्होंने तकनीक और अच्छी केबलिंग में काफी पैसा खर्च किया है, मैदान में रह जाएंगे।

दूसरी बात हर उपयोक्ता केबल मोडम के लिये बीस हजार रुपये खर्च करने को तैयार नही होगा। अत: केबल ऑपरेटर को उपयोक्ता को राजी करने या उसे फायनेंस करने में भी पैसा लगाना होगा। उपयोक्ता को चूंकि टेलीफोन मोडम के मुकाबले ज्यादा गति से इंटरनेट से जुड़ने की सुविधा उपलब्ध होगी, अत: इसके लिये उसे केबल ऑपरेटर को कुछ ज्यादा पैसा भी देना होगा। कितना ज्यादा? यह ऑपरेटर के प्लान और वित्तीय क्षमता पर निर्भर करेगा।

इन सभी बातों पर गौर करने से लगता है कि भारत में कुछ ही केबल ऑपरेटर केबल द्वारा इंटरनेट सेवा प्रदान करने में सक्षम होंगे। कारण कि अभी केबल ऑपरेटर निम्न आय वर्ग और तकनीक में कम से कम निवेश करके अपना काम चला रहे हैं, जबकि इस नये मौके और तकनीक का फायदा उठाने के लिये उन्हें वर्तमान निवेश से कई गुणा ज्यादा निवेश करना पड़ेगा।

अब पेजर पर ई-मेल

अभी तक कुछ शहरों में मोबाइल फोन उपयोक्ता अपने मोबाइल पर ई-मेल संदेश प्राप्त कर सकते हैं अब पेजर उपयोक्ता भी अपने पेजर पर ई-मेल संदेश प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट सेवा प्रदाता वी.एस.एन.एल. ने पेजिंग सर्विस कंपनी इजीकाल के साथ मिलकर मुंबई में यह सेवा शुरू की है। यह सेवा वी.एस.एन.एल. के इंटरनेट उपयोक्ता तथा इजीकाल के ऐसे उपयोक्ता, जिनके पास कम्प्यूटर या इंटरनेट कनेक्शन नही है, दोनों के लिये उपलब्ध है।

जिन उपयोक्ताओं के पास सिर्फ पेजर है वे 1,000/- रुपये सालाना शुल्क वी.एस.एन.एल. को देकर इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं। दूसरी ओर जिन लोगों के पास इंटरनेट कनेक्शन तथा पेजर दोनों हैं, वे भी 1,000/-रुपये का सालाना शुल्क अदा करके इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं।

इसके अलावा उपयोक्ता को 200/- रुपये प्रति वर्ष का शुल्क पेजिंग कंपनी को अदा करना पड़ेगा। इससे उपयोक्ता प्रति महीने 60 ई-मेल संदेश अपने पेजर पर प्राप्त कर सकते हैं। इससे अधिक संदेश प्राप्त करने के लिये आपको दो रुपये प्रति संदेश अलग से अदा करना होगा। वी.एस.एन.एल. धीरे-धीरे इस सेवा का विस्तार मुंबई के अलावा अन्य शहरों में भी करेगा।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

विवाह की तैयारी में मददगार इंटरनेट

विवाह की रस्म समाज, धर्म और जगह के हिसाब से अलग-अलग रूपों में अदा की जाती है, लेकिन इसमें कुछ चीजें ऐसी भी होती हैं, जो सभी रूपों में समान होती हैं जैसे दुल्हा-दुल्हन को सजाना, उनके लिये नये कपड़ों और गहनों की खरीदारी, मेहमानों को आमंत्रित करना और विवाह के बाद दुल्हा-दुल्हन का मधुमास बिताने के लिए किसी जगह घूमने जाना।

विवाह के इतने सारे काम अक्सर थका देने वाले और तनावपूर्ण होते हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति के आपसी मेलजोल और संयुक्त परिवार की धारणा के फलस्वरूप किसी को कोई तकलीफ महसूस नहीं होती। विदेशों की संस्कृति कुछ अलग है। वहां संयुक्त परिवार की धारणा भी न के बराबर है। वहां विवाह संबंधी सभी कामकाज अक्सर वर-वधु को खुद ही करने पड़ते हैं और यह एक कष्टदायी और मुश्किल प्रक्रिया होती है। ऐसे में उनके काम को आसान करने का बीड़ा उठाया है इंटरनेट पर स्थित एक वेब ठिकाने ने।

वैडिंग चैनल नाम का यह वेब ठिकाना काफी जानकारियों से भरपूर है और काफी सुविधाएं प्रदान करता है। 15 जुलाई 1997 को शुरू हुआ यह वेब ठिकाना अभी तक काफी जोड़ों की मदद कर चुका है। यह पहला वेब ठिकाना है जो व्यक्तिगत सूचनाओं का संग्रह करने, मधुमास के लिये यात्रा तय करने, ऑनलाइन खरीदारी करने, दुल्हन के साज श्रृंगार के बारे में नवीनतम सूचनाएं उपलब्ध कराने जैसे काम करता है।

होने वाले पति-पत्नी जरूरी जानकारियां, चित्र, विवाह-योजना संबंधी कागजात आदि यहां सुरक्षित रूप से संग्रह कर सकते हैं। इतना ही नहीं, वे अपने खर्चे से संबंधित जानकारी, मेहमानों की लिस्ट, उनके नाम पते, रिसेप्शन समारोह में बैठने का आयोजन, जरूरी कामों को याद दिलाने के लिये ई-मेल संदेश, दुल्हन के साज श्रृंगार की योजना को भी यहां संग्रहित कर सकते हैं। यहां वे अपने मेहमानों से संपर्क भी साध सकते हैं। इंगेजमेंट समारोह से लेकर हनीमून तक की हर प्रक्रिया पर, विश्व प्रसिद्ध पुस्तक **प्लानिंग ए वैडिंग टु रिमेम्बर** के लेखक बेवर्ली क्लार्क के विचार तथा याद रखने लायक जरूरी बातों पर उनकी सलाह भी इस ठिकाने पर उपलब्ध है। उपयोक्ता द्वारा पूछे जाने वाले विवाह योजना से संबंधित सवालों का जवाब देने, वित्तीय प्रबंधन तथा बीमा सलाह प्रदान करने आदि के लिये इस ठिकाने पर मुफ्त में विशेषज्ञ भी उपलब्ध हैं। और अगर कोई बोर हो जाए तो मनोरंजन के लिये अपने ''प्यार का भविष्य'' भी आप देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस ठिकाने पर निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध हैं:

बजट प्लानर - यहां पर आप अपना बजट, आमंत्रित मेहमानों की संख्या, विवाह समारोह से संबंधित अन्य खर्चे आदि डाल कर विस्तृत बजट बना सकते हैं। इससे आपको किसी मद में होने वाले खर्चे में संशोधन करके बजट नियंत्रित करने में आसानी होगी।

लोकल व्यापार निदेशिका - विवाह से संबंधित सामान बेचने वाली पांच लाख से भी ज्यादा दुकानों की विस्तृत जानकारी इस ठिकाने पर मौजूद है, जिसमें से आप अपनी भौगोलिक स्थिति और व्यापार के हिसाब से अपनी नजदीकी दुकान का चुनाव कर सकते हैं और चाहें तो यहीं से अपनी मनपसंद चीज का आर्डर भी दे सकते हैं।

फैशन एवं सौंदर्य - दुल्हन के लिए, इस वेब ठिकाने का यह भाग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस भाग में दुल्हन के वस्त्रों के 8500 से ज्यादा डिजाइन फोटोग्राफ की शक्ल में मौजूद हैं। सिर्फ परिधान ही नहीं, वरन गहनों के भी डिजायन आपको यहां मिलेगें और ये सभी डिजायन, नामी डिजायनरों द्वारा पेश किये गये हैं। हर तरह के शरीर के लिये उचित पोशाक का चुनाव करने संबंधित कुछ बातें, नामी गिरामी मेकअप विशेषज्ञों के लेख इस भाग के अन्य महत्वपूर्ण आकर्षण हैं।

हनीमून सुईट - मधुमास यात्रा संबंधी योजना बनाने के लिये इस वेब ठिकाने का हनीमून सुईट वाला भाग काफी उपयोगी है। यहां विश्व भर के हजारों से ज्यादा जगहों के बारे में पर्यटन गाइड, यात्रा संबंधी सुझाव, यात्रा के साधन आदि कई उपयोगी जानकारियां मौजूद हैं। यात्रा संबंधी अग्रिम आरक्षण भी यहां से कराये जा सकते हैं वह भी बिना कुछ ज्यादा पैसा खर्च किये। बल्कि आप विभिन्न ट्रेवल एजेंसियों से। सस्ती दर और पैकेज टूर के बारे में सौदेबाजी भी कर सकते हैं।

फिलहाल इस ठिकाने पर दुल्हे के फैशन और सौंदर्य से संबंधित जानकारियां काफी कम मात्रा में उपलब्ध हैं, लेकिन इस वेब ठिकाने को चलाने वालों के अनुसार जल्दी ही इस विषय पर काफी मसाला उपलब्ध कराया जायेगा।

इस वेब ठिकाने की प्रसिद्धि और उपयोगिता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि रोजाना करीब 7,000 लोग इस वेब ठिकाने को देखते हैं और इसमें करीब 85 प्रतिशत दुल्हा या दुल्हन बनने वाले होते हैं। अंत में आपको एक मजे की बात बतायें वर-वधु अपनी मुलाकात, प्रेम कहानी के विवाह में बदलने की दास्तां और अपने भविष्य की योजनाएं दूसरे लोगों को बताने के लिये इस वेब ठिकाने के एक हिस्से में अपना वेब ठिकाना भी बना सकते हैं।

साइबर ढाबा : एक अलग अंदाज

नाम पढ़कर ये न सोचिये कि हम इंटरनेट कॉलम में ढाबे की बात क्यों कर रहे हैं। जनाब इस साइबर ढाबा में आपको खाने-पीने की चीजें नहीं मिलेंगी, यहां तो आपको मिलेगा इंटरनेट से जुड़ा कम्प्यूटर। असल में ये साइबर ढाबा महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड के दिमाग की उपज है। महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड ने मुंबई और दिल्ली में करीब 20 ढाबे खोलने का विचार बनाया है। उम्मीद है जनवरी, 1999 तक ये सभी ढाबे काम करना शुरू कर देंगे।

साइबर कैफे, जो निजी उद्यमियों द्वारा चलाये जा रहे हैं, की अपार सफलता और लोकप्रियता को देखते हुए म.टे.नि.लि. ने भी इस दौड़ में हिस्सा लेने का फैसला किया है।

भारत में इस समय करीब सौ से ज्यादा साइबर कैफे चल रहे हैं और ये इंटरनेट से जुड़ने के लिए पचास से लेकर दो सौ रुपये प्रति घंटा तक का शुल्क वसुल करते हैं। उदयपुर में तो एक साइबर कैफे का शुल्क 900 रुपये प्रति घंटा है क्योंकि उदयपुर में इंटरनेट सुविधा न होने के कारण ये एस.टी.डी. द्वारा जयपुर से जुड़कर इंटरनेट सुविधा प्रदान करते हैं। साइबर ढाबा में इंटरनेट से जुड़ने का खर्च साइबर कैफे के मुकाबले कम रहेगा।

यही नही अपनी इस योजना को बढ़ावा देने के लिये म.टे.नि.लि. ने मुंबई के कुछ स्कूलों में छात्रों को इस सुविधा को बिल्कुल मुफ्त मुहैया कराने की योजना भी बनाई है।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

भारत के रणबाकुंरे इंटरनेट पर

''ए मेरे वतन के लोगो'' इस गीत को सुनकर न जाने कितने लोगों की आंखें भर आती है और मन अपार श्रद्धा से भर उठता है भारत के उन वीर जवानों के प्रति जिन्होंने देश की आजादी की रक्षा के लिये अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। सिर्फ भारत की रक्षा ही नहीं, बल्कि मयननार और मलाया के जगंलों में, उत्तरी अफ्रीका और मेसोपोटामियां के रेगिस्तान में, इटली की पहाड़ियों में तथा बांग्ला देश की रक्षा में भी हमारे रणबाकुंरो ने अपने जौहर दिखाये हैं। सिर्फ देश की सीमा पर या देश के बाहर ही नही बल्कि देश के अंदर भी पुलिस बल या अर्द्ध सैनिक बलों के रूप में कानून व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी ये बखूबी निभाते हैं। गणतंत्र दिवस के इस अवसर पर, इन वीरों को याद करते हुए, हम आपको इंटरनेट की दुनिया में ले चलते हैं जहां भारत के रक्षक इन रणबाकुंरों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

इंटरनेट पर भारत सरकार के अधिकारिक और गैर-अधिकारिक दोनों तरह के वेब ठिकाने हैं जिन पर भारतीय सेनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। इनमें से सबसे ज्यादा जानकारी देने वाला वेब ठिकाना है भारत रक्षक (www.bharat-rakshak.com)। हालांकि, यह वेब ठिकाना भारत सरकार का अधिकारिक वेब ठिकाना नही है। इस वेब ठिकाने पर भारतीय थल सेना, नौसेना, वायु सेना, भारतीय अस्त्र सेना, आदि के बारे में जानकारी के साथ-साथ भारतीय अंतरिक्ष और भारतीय अणुशक्ति के बारे में भी विस्तृत सूचनाएं मौजूद हैं। आजादी के बाद भारतीय सेनाओं ने किस-किस लड़ाई में भाग लिया इसकी जानकारी भी आपको यहां मिल जायेगी और अगर आप खुद भारतीय सशस्त्र सेनाओं का हिस्सा बनना चाहते हैं, तो इनमें रोजगार के अवसरों की जानकारी भी आप यहां से प्राप्त कर सकते हैं।

अधिकारिक वेब ठिकानों में से कुछ हैं भारतीय सशस्त्र सेनाएं, काश्मीर में सेना, मुंबई पुलिस बल, चंडीगढ़ पुलिस बल, नेशनल ऐरोस्पेस लेबोरेट्रीज, इस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, कर्नाटक राज्य सैनिक बोर्ड, आदि। गैर अधिकारिक वेब ठिकानों में कुछ हैं गढ़वाल राइफल्स, आर्डनेंस फैक्ट्री बोर्ड, हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड तथा कुछ अन्य।

भारतीय सेनाओं के अधिकारिक वेब ठिकानों पर बहुत ज्यादा जानकारी उपलब्ध नही है। भारतीय सशस्त्र सेनाओं के वेब ठिकाने पर भारतीय वायु सेना, थलसेना और नौसेना का परिचय मात्र उपलब्ध है। भारतीय थल सेना के एक अधिकारिक वेब ठिकाने पर काश्मीर की ताजा हालत, वहां भारतीय सेना की गतिविधियां तथा आंतकवादियों से मुठभेड़, उनकी गिरफ्तारी और हथियारों की बरामदगी के साथ-साथ रोजाना सीमा के हालात पर खबरें भी उपलब्ध है। इस संदर्भ में आपको एक जानकारी दे दें कि पहले यह वेब ठिकाना www.armyinkashmir.com पर था, लेकिन अक्टूबर 1998 के महीने में कुछ शरारती तत्वों ने इस वेब ठिकाने में घुसपैठ कर यहां उपलब्ध सभी सूचनाएं नष्ट कर दी थी। इसके बाद इस वेब ठिकाने का पता बदलकर www.armyinkashmir.org कर दिया गया।

कुछ भारतीयों ने देश प्रेम या अपने शौक की वजह से इस दिशा में काफी प्रयास किया है। इन भारतीयों ने इंटरनेट पर अपने वेब ठिकाने बना रखें हैं तथा उनमें भारतीय वायु सेना से संबंधित काफी सामग्री उपलब्ध करायी है। इनमें से कुछ हैं जगन का वेब ठिकाना, शिवशंकर शास्त्री का वेब ठिकाना, पवन कौल का वेब ठिकाना, आदि। इनमें से शिवशंकर शास्त्री एक दंत चिकित्सक हैं और इन्हें वायुयान पसंद है। इनके वेब ठिकाने पर आप उड़ते हुए लड़ाकू विमानों की कुछ छोटी-छोटी फिल्में भी देख सकते हैं।

इन लोगों के इस प्रयास की हम सराहना करते हैं तथा उम्मीद करते हैं कि भारत सरकार, हमारी सेना के अधिकारी तथा अन्य भारतीय इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखेंगे।

इंटरनेट से जुड़े कुछ तथ्य

- पूरे विश्व की जनसंख्या का सिर्फ 2.4 प्रतिशत हिस्सा इंटरनेट से जुड़ा है।
- भारत में प्रत्येक 2070 में से सिर्फ एक आदमी इंटरनेट से जुड़ा है।
- एक कम्प्यूटर की कीमत, बंग्लादेश के एक व्यक्ति की औसतन आठ वर्ष की कमाई के बराबर है जबकि एक अमेरिकन की औसतन एक महीने की कमाई के बराबर।
- इंटरनेट पर मौजूद सभी वेब ठिकाने में से 80 प्रतिशत वेब ठिकाने अग्रेंजी का प्रयोग करते हैं हालाकि विश्वभर में सिर्फ 10 प्रतिशत लोग ही बातचीत के लिये अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं।
- अमेरिका में लड़कियों से पांच गुना ज्यादा लड़के घर पर कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं।
- विश्व में 30 प्रतिशत इंटरनेट उपयोक्ता किसी विश्वविद्यालय से डिग्री हासिल किये हैं, जबकि आयरलैंड में डिग्री प्राप्त उपयोक्ताओं का प्रतिशत 70 है।
- अमेरिका में कुल इंटरनेट उपयोक्ताओं का 38 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है, जबकि अरब देशों में यह सिर्फ 4 प्रतिशत है।
- अमेरिका में इंटरनेट उपयोक्ता औसतन 36 वर्ष की उम्र के हैं, जबकि चीन तथा ब्रिटेन में तीस वर्ष से कम उम्र के।
- वर्ष 2003 तक एशियन देशों में इंटरनेट उपयोक्ताओं की संख्या, जो 1998 के अंत में करीब डेढ़ करोड़ थी, बढ़कर करीब साढ़े छः करोड़ हो जाने की उम्मीद है।
- वर्ष 2003 तक चीन, दक्षिण कोरिया, भारत तथा आस्ट्रेलिया के इंटरनेट उपयोक्ताओं की संख्या, एशिया प्रायद्वीप के, कुल इंटरनेट उपयोक्ताओं की संख्या का 70 प्रतिशत होगी।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

प्राणघातक भी हो सकता है इंटरनेट

जहां फूल होते हैं, वहां कांटे भी होते हैं, ये कहावत इंटरनेट पर भी लागू होती है। लेकिन इंटरनेट के ये कांटे इतने भयानक होंगे कि लोग आत्महत्या करने लगें, इसकी कल्पना शायद किसी ने भी नहीं की होगी। लेकिन जापान में हाल ही में ऐसा हुआ। दिसम्बर महीने में जापान में कुछ लोगों द्वारा पोटेशियम साइनाइड जहर खाकर आत्महत्या करने की घटना प्रकाश में आई। छानबीन करने पर पता चला कि उन लोगों ने यह जहर इंटरनेट के एक वेब ठिकाने पर आर्डर देकर मंगाया था। यह वेब ठिकाना ''नावाकि हाशीमोतो'' नाम के एक विज्ञान अध्यापक का था, जो अपने वेब ठिकाने द्वारा बीमार और परेशान लोगों को तुरंत आराम पाने के बारे में सलाह देता था। ''हाशीमोतो'' जापानी कॉमिक्स के एक काल्पनिक किरदार ''डॉ. किरिको'' का नाम अपना कर अपने वेब ठिकाने द्वारा न सिर्फ लोगों को दोस्ताना सलाह देता था, बल्कि साइनाइड के कैप्सूल भी बेचता था। पुलिस के अनुसार ''हाशीमोतो'' ने अपने संबंधों का प्रयोग करके 500 ग्राम से ज्यादा जहर इकट्ठा कर लिया था, जो तीन हजार लोगों को मार डालने के लिये काफी था।

इस कांड ने जापानी अधिकारियों में न सिर्फ सनसनी फैला दी है, वरन्, इस बात पर भी विवाद खड़ा कर दिया है कि इंटरनेट पर इस तरह की खतरनाक सूचनायें देने वाले वेब ठिकानों पर सेंसरशिप लागू की जाये या नही। जापानी सरकार पहले से ही इंटरनेट पर मौजूद आपत्तिजनक एवं अश्लील सामग्री को लेकर चिंताग्रस्त हैं।

अगर इंटरनेट पर मौजूद जापानी वेब ठिकानों पर आत्महत्या जैसे विषयों को खोजा जाय तो करीब 20,000 से ज्यादा वेब ठिकाने मिल जायेंगे। इनमें से कुछ तो हताश लोगों को आत्महत्या करने से बचने के बारे में सलाह प्रदान करते हैं, लेकिन ''डॉ. किरिको'' जैसे कई ठिकाने ''अपने जीवन का अंत कैसे किया जाय'' विषय पर दिशा निर्देश उपलब्ध कराते हैं।

अधिकारियों की चिंता इस बात से भी ज्यादा बढ़ी है कि हाशीमोतो के वेब ठिकाने को बंद कर दिये जाने के कुछ दिनों बाद इस तरह के कई और नये वेब ठिकाने बन गये। इन सब बातों से जापानी युवाओं में बढ़ती हताशा, अकेलापन और उससे उत्पन्न आत्महत्या की प्रवृत्ति उभरकर सामने आती है, लेकिन इन सब से ज्यादा चिंता का विषय है, इंटरनेट का यह भयावह चेहरा।

इंटरनेट पर भारतीय भाषाएं

अंग्रेजी का वर्चस्व हर जगह दिखाई पड़ता है। चाहे स्कूल कॉलेज हो या दफ्तर। यहां तक कि आपसी बातचीत के समय में भी अंग्रेजी शब्दों का मूल भाषा के साथ मिश्रण आम बात है। फिर मामला इंटरनेट का हो तो अंग्रेजी को सर्वाधिक अंक मिलते हैं। लेकिन क्षेत्रीय भाषाएं भी अब इंटरनेट पर अंग्रेजी को टक्कर देने के लिये कमर कस रही हैं।

जापानियों और फ्रांसीसीयों का अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम जग जाहिर है। यही वजह है कि आज इन दोनों भाषाओं के अनेकों वेब ठिकाने इंटरनेट पर उभर रहे हैं। जापानी वेब ठिकानों को इंटरनेट पर ढुंढने के लिये कई विशेष जापानी भाषा के खोजी वेब ठिकाने भी मौजूद हैं। चीन भी भाषाओं की इस दौड़ में शामिल हो रहा है। लेकिन अगर हम भारतीय भाषाओं पर नज़र डालें तो पता चलता है कि भारतीय भाषाओं के वेब ठिकाने नगण्य मात्रा में मौजूद हैं। हिंदी समाचार पत्रों में मिलाप, जागरण, राजस्थान पत्रिका जैसे कुछेक समाचार पत्र ही अपने वेब ठिकाने पर हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाएं जिनका प्रयोग वेब

ठिकानों पर हो रहा है, हैं मराठी, कन्नड़, गुजराती, मलयालम, तमिल एवं संस्कृत। लेकिन इन सभी भाषाओं में इंटरनेट पर औसतन दो से तीन ही वेब ठिकाने मौजूद हैं। जहां तक ई-मेल का सवाल है, भारतीय भाषाओं में अभी सिर्फ हिंदी, मराठी और बंगाली भाषाओं में ही ई-मेल की सुविधा उपलब्ध हो पायी है। हिंदी और मराठी में ई-मेल की शुरूआत तो हाल ही में हुई है और इसमें पुणे की एक कंपनी सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटिंग (सी.डेक) का योगदान सराहनीय है। लेकिन इन वेब ठिकानों पर उपलब्ध सामग्री को पढ़ने या ई-मेल सुविधा का लाभ लेने के लिये आप को इन वेब ठिकानों से कुछ फॉन्ट अपने कम्प्यूटर पर डालने पड़ेंगे। इतना ही नहीं, जिसे आप ई-मेल भेज रहे हैं उसके पास भी वही फांट होना चाहिए, जिसका प्रयोग आपने किया है। भारतीय भाषाओं के इंटरनेट पर प्रयोग में सबसे बड़ी समस्या है इन भाषाओं के उपलब्ध फॉन्ट्स में एकरूपता का न होना। किसी एक भारतीय भाषा का फॉन्ट अगर पांच कंपनियों ने बनाया तो पांचों का की बोर्ड ले आउट एक जैसा नही होता। फलत: किसी एक लेख या ई-मेल को किसी भारतीय भाषा में लिखा जाय तो उसे पढ़ने वाले के पास भी वही फॉन्ट होना जरूरी है जिसमें उसे लिखा गया है। भारतीय भाषाओं के मामले में दूसरी सबसे बड़ी समस्या है उपयोक्ता के कम्प्यूटर पर इन भाषाओं के फॉन्ट की कमी एवं उपयोक्ता को इन भाषाओं में टाईप करने का अनुभव न होना। इनके साथ साथ एक और मुश्किल जो उपयोक्ता के सामने आती है, वह है भारतीय भाषाओं के साफ्टवेयर का न होना।

आई.बी.एम. जैसी कुछ बड़ी कंपनियां इस दिशा में काम कर रही हैं और आशा है कि इनके प्रयासों का कोई सुखद नतीजा जल्दी ही हमारे सामने आएगा। उन लोगों को जिन्हें अंग्रेजी समझने, बोलने या पढ़ने में दिक्कत होती है, अपनी भाषा में कम्प्यूटर पर काम करने में तथा इंटरनेट और ई-मेल जैसी सुविधाओं का लाभ उठाने में आसानी होगी।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

सीखें ई-मेल लिखने के तौर तरीकें!

इंटरनेट का उपयोग लोग मुख्यत: एक दूसरे से संपर्क साधने के लिये करते हैं। इंटरनेट पर लोग दो तरहों से आपस में संपर्क कर सकते हैं। ई-मेल द्वारा या फिर चैट (बातचीत) द्वारा। दोनों तरीकों में पुराना, विश्वसनीय और सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाने वाले तरीका है ई-मेल।

यूं तो इंटरनेट से जुड़े सभी लोग, कभी न कभी ई-मेल का प्रयोग करते हैं, लेकिन कुछ लोगों का तो अधिकांश समय ई-मेल पढ़ने और उसका जवाब देने में ही बीतता है।

इसके बावजूद कई लोगों को यह नही मालूम कि ई-मेल लिखना भी पत्र लिखने जैसी एक कला है। नतीजा यह होता है कि वे अपनी मनमर्जी के हिसाब से ई-मेल लिखते हैं और पाने वाले पर इसका मनवांछित असर नही होता। आपकी जानकारी और फायदे के लिये हम आपको ई-मेल लेखन से संबंधित कुछ सुझाव दे रहे हैं।

- ई-मेल की शुरूआत हमेशा पत्र की तरह उपयुक्त संबोधन से करें।
- ई-मेल का विषय हमेशा दें। इसे कभी भी खाली न छोड़े या 'नो सब्जेक्ट' न लिखें।
- कई लोग ई-मेल लिखते समय शब्दों के संक्षिप्त रूप या संकेतों का प्रयोग करते हैं। अगर आप किसी को पहली बार ई-मेल भेज रहे हैं या कोई व्यवसायिक ई-मेल लिख रहे हैं तो ऐसा करने से हमेशा बचें।
- ई-मेल लिखते समय शब्दों के चयन तथा ई-मेल की भाषा पर हमेशा ध्यान दें। अधिकतर ई-मेल, अगर बहुत गैर जरूरी न हो तो, पाने वाला अपने कंप्यूटर से डिलीट नही करता। ऐसे में आपके द्वारा इस्तेमाल किये गये गलत शब्द या भाषा एक दस्तावेज बन जाते हैं।
- ई-मेल के अंत में, पत्र की तरह, उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए अपना नाम अवश्य लिखें।
- अगर आपको कोई ई-मेल भेजता है और आप उसे तुरंत जवाब देने में असमर्थ हैं तो कम से कम इस बात की सूचना अवश्य दे दें कि आप कुछ समय बाद इस ई-मेल का उचित जवाब भेजेंगे। अगर आप किसी कारण वश तुरंत ऐसा करने में असमर्थ हों तो अधिकतम 24 या 48 घंटों में ई-मेल का जवाब जरूर दे दें।
- ई-मेल लिखने के बाद और उसे भेजने से पहले शब्दों की स्पेलिंग व ग्रामर की जांच जरूर कर लें।
- ई-मेल लिखने के लिये बहुत ज्यादा फांट या रगों का इस्तेमाल न करें। ई-मेल में सिर्फ एक ही फांट तथा अधिकतम दो (एक काला एवं दूसरा कोई अन्य) रंगों का प्रयोग करें।
- अंत में एक महत्वपूर्ण बात, ई-मेल में कभी भी सभी शब्दों को बड़े अक्षरों में न लिखें। इंटरनेट के तौर तरीकों में ऐसा करना दूसरों पर चिल्लाने के समान होता है, जो ई-मेल पाने वालों को नाराज करने के लिये काफी होता है।

ई-मेल लिखते समय उपरोक्त सुझावों को ध्यान में रखें तो आपके द्वारा भेजी गयी ई-मेल, पाने वाले पर, आपके व्यक्तित्व की अच्छी छाप छोड़ेगीं।

भारतीय रेल अब इंटरनेट पर

इंटरनेट ने दुनिया में एक तेज रफ्तार की आंधी ला दी है। इस तेज रफ्तार की आंधी से खुद को बचा पाना काफी कठिन होता जा रहा है। धीरे-धीरे निजी कंपनियों के अलावा सरकारी संस्थान और मंत्रालय भी इसकी चपेट में आते जा रहे हैं।

इस आंधी ने हाल ही में भारतीय रेल को अपनी चपेट में लिया है। भारतीय रेल अब इंटरनेट पर मौजूद है और इसके ठिकाने पर भारतीय रेल की शुरूआत, यात्रियों के लिये मौजूदा सुविधाएं, पर्यटकों के लिये विशेष जानकारी, रेलवे द्वारा चलायी जाने वाली विशेष रेलगाड़ियों की जानकारी, विस्तृत रेलवे बजट, समय सारणी,

खरीद एवं निविदा सूचनाएं, भारतीय रेल का नेटवर्क आदि तमाम जानकारियां उपलब्ध हैं। इस वेब ठिकाने के अनुसार करीब एक करोड़ दस लाख से ज्यादा यात्री प्रतिदिन भारतीय रेलों में सफर करते हैं।

भारतीय रेल के वेब ठिकाने पर बस एक सुविधा नही है और वह है ऑन लाइन आरक्षण सुविधा। समय सारणी इस वेब ठिकाने की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है, यह समय सारणी अप टु डेट रहेगी या नही, इसके बारे में अभी कुछ भी कह पाना मुश्किल है।

हम तो बस इतना कहेंगे कि आपकी रेल यात्रा मंगलमय हो।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट के फायदे और नुकसान

हाल ही में रांची के कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरों के अनुसार रांची में इंटरनेट सेवा अगले कुछ दिनों में शुरू होने की उम्मीद है। यह एक खुशखबरी है लेकिन इसके साथ एक निराशाजनक बात यह भी जुड़ी है कि रांची में अभी तक इंटरनेट कनेक्शन के लिये सौ से भी कम आवेदन पत्र दाखिल किये गये हैं। हालांकि उम्मीद है कि इंटरनेट सेवा शुरू हो जाने के बाद कनेक्शन लेने वालों की संख्या भी बढ़ेगी। डर इस बात का है कि इंटरनेट से होने वाले फायदों और नुकसान के बारे में समुचित जानकारी के अभाव में लोग इसका उचित उपयोग न कर पायें। इस लिये हम आपको इंटरनेट से होने वाले फायदों और नुकसान की विस्तृत जानकारी दे रहे हैं।

चूंकि इंटरनेट का न तो कोई इकलौता मालिक है और न ही इस पर अभी किसी तरह की सेंसरशिप लागू है, अत: इंटरनेट पर आप हर उस विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जिसके बारे में आप सोचते हैं। इतना ही नही, अगर आपको लगता है कि किसी विषय पर लोगों को बताने के लिये आपके पास कोई रोचक या मनोरंजक या ज्ञानवर्द्धक सामग्री है तो आप उसे इंटरनेट पर डालकर दूसरे लोगों को उपलब्ध करा सकते हैं। हालांकि सेंसरशिप न होने के कारण इंटरनेट पर अश्लील सामग्री, तस्वीरें आदि भी काफी मात्रा में उपलब्ध है, लेकिन यह उपयोक्ता की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह इस तरह की अश्लीलता को बढ़ावा न दें। सेंसरशिप न होने की वजह से ही इस सदी के सबसे चर्चित यौन प्रकरण **क्लिंटन-मोनिका सैक्स कांड** के बारे में, स्वतंत्र वकील कैनेथ स्टार की रिपोर्ट जारी होने के कुछ ही समय बाद इंटरनेट पर उपलब्ध हो गयी थी, जिसे करोड़ो लोगों ने पढ़ा था।

इंटरनेरट न सिर्फ सूचनायें उपलब्ध कराता है वरन् संचार सेवा के क्षेत्र में भी इसने क्रांति ला दी है। ई-मेल, वीडियो-मेल, इंटरनेट टेलीफोनी आदि कई सेवाएं जो इंटरनेट पर उपलब्ध है, ने न सिर्फ संचार सेवाओं के खर्चे में कमी ला दी है बल्कि संचार को सुगम और तीव्रतर गति प्रदान की है। भारत में इंटरनेट टेलीफोन का उपयोग गैरकानूनी है लेकिन सरकार इस सेवा पर से प्रतिबंध हटाने पर विचार कर रही है। जब आप इंटरनेट से जुड़ते हैं तो आप ई-मेल की सुविधा का लाभ उठाकर देश-विदेश में कही भी अपने सगे संबंधियों, व्यापारिक या व्यक्तिगत मित्रों से तुरंत संपर्क बना सकते हैं और वह भी बिना ज्यादा पैसा खर्च किये। इंटरनेट ने सूचना के क्षेत्र में जो क्रांति ला दी है, उसका सबसे अच्छा उदाहरण इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न समाचारपत्रों के वेब ठिकाने हैं। ये ठिकाने न सिर्फ देश विदेश की ताजा खबरें उपलब्ध कराते हैं वरन् कई अन्य तरह की जानकारियां भी देते हैं, जैसे **रांची एक्सप्रेस** के वेब ठिकाने पर खबरों के अलावा दक्षिण बिहार के पर्यटन स्थलों, उद्योग धंधों आदि की विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। अब तो ऐसे भी वेब ठिकाने हैं जो प्रत्येक घंटे नई घटनाओं को अपने वेब ठिकाने पर उपलब्ध कराते हैं। इंटरनेट से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस पर समय या भौगोलिक सीमाओं की कोई पाबंदी नही है। दिन हो या रात आप जब चाहें अपनी सुविधानुसार इंटरनेट से जुड़कर रांची में बैठे बैठे, अमेरिका की किसी कंपनी के उत्पादों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं या फ्रांस की किसी इत्र बेचने वाली कंपनी को अपने मनपसंद इत्र का आर्डर दे सकते हैं और वह आपको जितने दिनों में प्राप्त होगा, उतने दिन में परंपरागत रूप से पत्राचार करने पर आप अपना आर्डर भी कंपनी को नही भेज पाते। सिर्फ खरीदारी ही नही, आप चाहें तो इंटरनेट पर एक वेब ठिकाना बनाकर अपना ऑनलाइन स्टोर भी खोल सकते हैं और अपने उत्पाद दुनिया भर में बेच सकते हैं।

इंटरनेट सही मायनों में विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का एकलौता माध्यम है। इंटरनेट पर मौजूदा सैंकड़ों लाखों वेब ठिकानों पर आप कभी भी किसी भी विषय पर आप अपने विचार प्रकट कर सकते हैं। चाहे वह *फायर* फिल्म में समलैंगिकता का विषय हो या सलमान रशदी को भारत सरकार द्वारा वीजा दिये जाने का विवाद और तो और इंटरनेट पर विचारों की अभिव्यक्ति का एक और माध्यम है चुटकुलों द्वारा। आप किसी भी व्यक्ति या विषय को लेकर चुटकुले लिखें और किसी वेब ठिकाने पर डाल दें या दूसरों को ई-मेल संदेश द्वारा भेज दें। हाल ही में किसी ने ई-मेल द्वारा हमें लालू प्रसाद के बारे में कुछ चुटकुले भेजें। वे चुटकुले ऐसे थे कि उनको अगर अखबार में छाप दिया जाय तो काफी हंगामा हो सकता है, लेकिन ये इंटरनेट है भैया।

इंटरनेट पर हर चीज या हर सेवा के लिये पैसा देना पड़ता हो, ऐसा नही है, बल्कि यहां तो उल्टा हिसाब है। यहां इतनी सेवाएं मुफ्त में उपलब्ध है कि आप सोच भी नही सकते। मुफ्त ई-मेल, मुफ्त वेब ठिकाने, मुफ्त ई-ग्रीटिंग कार्ड, मुफ्त सॉफ्टवेयर, मुफ्त...., मुफ्त...., और मुफ्त...। आप गिन भी नही पायेंगे, इतनी सारी चीजें यहां मुफ्त उपलब्ध हैं। आप सोच रहे होंगे कि इतनी चीजें मुफ्त में कौन दे रहा है और क्यों तो इसका जवाब है कि इसके लिये कोई अपनी जेब से पैसा खर्च नही करता। इन लोगों की आमदनी होती है विज्ञापन से और इंटरनेट ने तो इन मुफ्त सेवा प्रदान करने वाले लोगों में से कईयों को मालामाल भी कर दिया है। जिनमें से कुछ भारतीय भी हैं।

जहां फूल होते हैं, वहां कांटे भी होते हैं। इंटरनेट से जहां फायदे है वहां नुकसान भी कम नहीं हैं। इंटरनेट ने लोगों की दुनिया को एक कम्प्यूटर में समेट दिया है जिसके परिणाम स्वरुप उनमें हताशा और तनाव बढ़ते जा रहे हैं। इंटरनेट पर किसी तरह की सेंसरशिप न होने के कारण कुछ स्वार्थी और सिर फिरे लोग इसका गलत फायदा भी उठाते हैं। ऐसे ही एक व्यक्ति ने तो इंटरनेट को प्राणघातक भी बना दिया था।

इन बातों का यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इंटरनेट ऐसी भूल भूलैया है, जिसमें थोड़ा सा भी भटकने पर काफी नुकसान हो सकता है, लेकिन अगर थोड़ी सी सावधानी बरती जाय तो यह काफी फायदे की चीज भी साबित हो सकती है।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट से कैसे जुड़े?

इंटरनेट ने पूरी दुनिया को बदलकर रख दिया है। एक दूसरे से तीव्र संपर्क और किसी भी सूचना को एक जगह से दूसरी जगह तक तुरंत पहुंचाने की ललक और इस काम को पूरा करने की इंटरनेट की सामर्थ्य ने लोगों को इंटरनेट की शरण में पहुंचने पर मजबूर कर दिया है। लेकिन इंटरनेट से खुद को जोड़ना इतना आसान नही है, जितना हम समझते हैं। इंटरनेट से जुड़ने के लिये सबसे पहले आपको किसी इंटरनेट सेवा प्रदाता के पास आवेदन पत्र भेजकर तथा उसका सेवा शुल्क चुका कर पंजीकरण कराना पड़ता है। कुछ दिनों बाद जब आपको सेवा प्रदाता से यूजर नेम यानी उपयोक्ता नाम तथा पासवर्ड मिलता है तो फिर आप इंटरनेट का आनंद उठाने की पहली सीढ़ी चढ़ जाते हैं। लेकिन मंजिल तक पहुंचने के क्रम में आपको अपने कम्प्यूटर में कुछ सॉफ्टवेयर डालने होते हैं, कुछ सैटिंग करनी पड़ती है, कम्प्यूटर को मोडम की सहायता से टेलीफोन लाइन से जोड़ना पड़ता है। तब कहीं जाकर आप इंटरनेट से जुड़ने की पूरी क्षमता हासिल कर पाते हैं। पूरी प्रक्रिया पढ़ने में मुश्किल लगती है। घबराइये नही। यह सभी काम थोड़े कठिन जरूर हैं, लेकिन हम आपकी इन मुश्किलों को दूर करने के लिये आपको बता रहे हैं कि आप इंटरनेट से जुड़ने के लिये ये सभी तैयारियां कैसे करेंगे।

आजकल कम्प्यूटर के क्षेत्र में अधिकतर उपयोक्ता विंडोज 95 या विंडोज 98 का प्रयोग कर रहे हैं। कुछ लोग अगर विंडोज के पुराने संस्करण का भी उपयोग कर रहे हैं तो उम्मीद है कि वो जल्दी ही विंडोज 95 या विंडोज 98 का उपयोग करने लगेंगे। अत: हम मानकर चल रहे हैं कि जो उपयोक्ता इस कॉलम को पढ़ रहे हैं, वे विंडोज 95 या विंडोज 98 का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही हम यह भी उम्मीद करते हैं कि आपका कम्प्यूटर, टेलीफोन लाईन से मोडम द्वारा जुड़ा हुआ है एंव आपके पास विंडोज की फ्लॉपी या सी.डी. है। तो पेश है इंटरनेट से जुड़ने के लिये आपके कम्प्यूटर एवं सॉफ्टवेयर की संरचना में बदलाव के लिये क्रमवार जरूरी दिशा निर्देश।

डायल-अप नेटवर्किंग की सैटिंग

T.C.P./I.P. इंटरनेट खाते का प्रयोग करने के लिये जरूरी है कि आपके कम्प्यूटर पर डायल-अप नेटवर्किंग डाला हुआ हो। अगर आपके कम्प्यूटर पर डायल अप नेटवर्किंग मौजूद नही है तो आप विडोंज की फ्लापी या सी.डी. से उसे डाल लें।

TCP/IP प्रोटोकॉल की सैटिंग

अब आपको TCP/IP प्रोटोकॉल की सैटिंग करने की जरूरत पड़ेगी। आप कंट्रोल पैनल से नेटवर्क आप्शन का चुनाव करें। स्क्रीन पर एक छोटी विंडो खुलेगी। उसमें अगर आपको TCP/IP लिखा हुआ नज़र आ रहा है तो आप इस विंडो को बंद कर दें अन्यथा 'add' बटन दबायें। फिर जो विंडो स्क्रीन पर आयेगी, उसमें से प्रोटोकॉल आप्शन चुनें और फिर 'add' बटन दबायें। इस बार खुलने वाली विंडो में से निर्माता कॉलम में से माइक्रोसॉफ्ट और प्रोटोकॉल कॉलम में से TCP/IP का चुनाव करें। 'ok' बटन दबायें। इस समय कम्प्यूटर आपसे विंडोज की सी.डी. मांगेगा। और आपके कम्प्यूटर पर TCP/IP इंस्टाल हो जायेगा। इसके बाद फिर ok बटन दबायें। कम्प्यूटर दोबारा स्टार्ट करने के लिये आपकी स्क्रीन पर एक संदेश आयेगा। आप अपना कम्प्यूटर दोबारा स्टार्ट करें।

डायल अप नेटवर्किंग में नया कनेक्शन सैट करना

इस समय इंटरनेट से जुड़ने के लिये आपने अपने कम्प्यूटर को काफी हद तक तैयार कर दिया है। अब आपको अपने कम्प्यूटर में वी.एस.एन.एल. के फोन नम्बर तथा कुछ अन्य जरूरी सूचनाएं डालनी है। इसके लिये कम्प्यूटर की स्क्रीन पर मौजूद my computer को दो बार दबायें तथा उसमें से ''डायल अप नेटवर्किंग'' ऑप्शन को चुनें। कम्प्यूटर की स्क्रीन पर एक छोटी सी विंडो आयेगी, जिसमें से make new connection चुनें। परिणामस्वरूप उभरने वाली स्क्रीन में डायल किये जाने वाले कम्प्यूटर का नाम उदाहरण के लिये VSNL टाइप करें। select a modem आप्शन में अपने मोडम का नाम चुने। next बटन दबायें। अगली स्क्रीन में area code के लिये रांची का STD code 0651 डालें। telephone number वाले बाक्स में VSNL का नम्बर डालें जो रांची के लिये 172222 है। country code में india चुनें। next बटन दबायें। अगली स्क्रीन पर बिना कुछ किये finish बटन दबायें।

डायल अप नेटवर्किंग में आपके कनेक्शन की अंतिम सैटिंग

इस समय आपकी स्क्रीन पर डायल अप नेटवर्किंग विंडो के अंदर आपके बनाये गये नये कनेक्शन VSNL का icon होगा। इस पर माउस प्वाइंटर लाकर दायां बटन दबायें और उभरने वाली लिस्ट में से properties आप्शन चुने। स्क्रीन पर आपके कनेक्शन की सैटिंग आ जायेगी। इन सैटिंग में टेलीफोन नं, एरिया कोड तथा कंट्री दिखाई पड़ेगें। नीचे की तरफ आपके मोडेम का नाम होगा। इसी के नीचे configure बटन होगा। उसे दबायें।

अब आपके सामने जो स्क्रीन आयेगी, उसमें से options वाले पन्ने का चुनाव करें। bring up terminal window after dialing वाली लाइन के सामने वाले बक्से पर माउस क्लिक करें। इसी तरह display modem status वाली लाइन के सामने वाले बक्से पर माउस क्लिक करें। बिना कुछ और छेड़छाड़ किये ok बटन दबा दें। मोडम की सैटिंग वाली स्क्रीन हट जायेगी और VSNL के कनेक्शन की सैटिंग वाली स्क्रीन आपके सामने होगी। इसमें से server type वाला पन्ना चुनें। इस स्क्रीन पर type of dial up server आप्शन वाली लिस्ट में से ppp:windos95, windows nt3.5, internet का चुनाव करें। नीचे की तरफ दिये गये allowed network protocol में से सिर्फ TCP/IP चुनें। अब TCP/IP settings बटन को दबायें।

आपके सामने एक नयी स्क्रीन उभरेगी। इसमें आप server assigned IP address चुनें। फिर specify name server adderssess चुनें। अब आपको primary DNS और Secondary DNS नंम्बर डालने होंगे। यह दोनों नबंर आपको VSNL द्वारा भेजे गये पत्र में मिल जायेंगे। ok बटन दबायें। अगली स्कीन पर फिर ok बटन दबायें।

अब आपका कम्प्यूटर इंटरनेट से जुड़ने के लिये तैयार है। डायल अप नेटवर्किंग वाली विंडो में अपने कनेक्शन (VSNL) वाले icon बटन को डबल क्लिक करें। VSNL के सर्वर कम्प्यूटर से कनेक्ट होने के बाद एक स्क्रीन आपके कम्प्यूटर पर उभरेगी, जिसमें आपको यूजर नेम और पासवर्ड डालना होगा। यूजर नेम और पासवर्ड सही न होने की दशा में दोनों चीजें आपसे दोबारा पूछी जायेंगी। दोनों चीजें सही होने पर आपकी स्क्रीन पर dhanbad लिखा हुआ आएगा। अब आप PPP टाइप करें। और enter दबायें। स्क्रीन पर कुछ अजीब से अक्षर आने शुरू हो जायेंगे। घबरायें नहीं। या तो continue बटन दबायें या F7 दबायें। यह विंडो बंद हो जायेगी और एक छोटी सी विंडो आपकी स्क्रीन पर आयेगी। कुछ ही क्षणों में यह विंडो भी हट जायेगी और कम्प्यूटर स्क्रीन पर नीचे दाहिनी तरफ दो छोटे कम्प्यूटरों की तस्वीर बन जायेगी। इसका मतलब होगा कि आप इंटरनेट से जुड़ गये हैं। अब आप अपना ब्राउजर सॉफ्टवेयर खोलिये और इंटरनेट का आनंद उठाइये। इंटरनेट पर क्या करें! ये आपकी मर्जी।

इंटरनेट से जुड़ने के लिये ऊपर बतायी गयी प्रक्रिया सिर्फ वी.एस.एन.एल. द्वारा निर्धारित वर्तमान दिशा निर्देशों पर आधारित है। समय, जगह और सेवा प्रदाता के अनुसार इस प्रक्रिया में बदलाव हो सकता है।

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

भारतीय शिक्षण संस्थान इंटरनेट पर!

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय विश्वविद्यालयों की विश्वभर में एक अलग पहचान है। आज इंटरनेट के युग में जब विश्व की नामी गिरामी यूनिवर्सिटी इंटरनेट पर मौजूद है, तो फिर भला भारतीय क्यों पीछे रहें? इंटरनेट पर कई भारतीय विश्वविद्यालय तथा शिक्षण संस्थान अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। इनमें से एक है जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय। इस के वेब ठिकाने पर विश्वविद्यालय के पाठयक्रम, एडमिशन सूचना, एडमिशन परीक्षा की तारीख, विश्वविद्यालय समाचार, अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान आदि की विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। इस वेब ठिकाने की सबसे बड़ी उपलब्धि है इसका हिंदी संस्करण भी मौजूद होना। साथ ही आप इस विश्वविद्यालय के विभिन्न अधिकारियों एवं प्रोफेसरों के टेलीफोन नं. तथा ई-मेल पते भी यहां से हासिल कर सकते हैं। अगर इस विश्वविद्याल में आपकी पसंद का पाठ्यक्रम उपलब्ध न हो तो आप यहां से भारत के कई अन्य शिक्षण संस्थानों के वेब पते हासिल कर सकते हैं और अपने मनपसंद पाठ्यक्रम की जानकारी हासिल कर सकते हैं। आपकी जानकारी एवं सुविधा के लिये हम कुछ विश्वविद्यालयों के वेब ठिकानों के पते आपको बता रहे हैं -

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय - http://www.jnu.ac.in
हैदराबाद विश्वविद्यालय - http://www.uohyd.ernet.in
दिल्ली विश्वविद्यालय - http://www.du.ac.in
गोवा विश्वविद्यालय - http://unigoa.ernet.in/univer.html
आई. आई. टी. मुम्बई - http://www.iitb.ernet.in
आई. आई. टी. कानपुर - http://www.iitk.ernet.in
आई. आई. टी. मद्रास - http://www.iitm.ernet.in
आई. आई. एस. बंगलौर - http://www.iisc.ernet.in
इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी - http://www.ignou.edu
कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी - http://kuk.ernet.in
रूड़की यूनिवर्सिटी - http://www.rurkiu.ernet.in
पंजाबी यूनिवर्सिटी - http://www.pbi.ernet.in

भारतीय समाचार पत्र इंटरनेट पर!

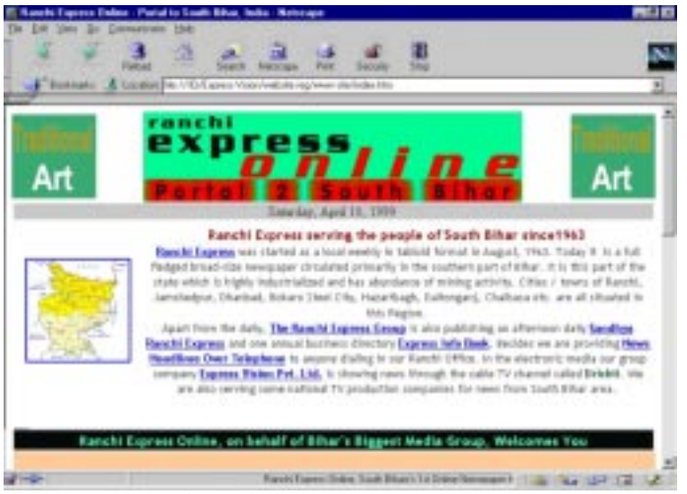

तकनीक के बढ़ते कदमों ने हमारी दिनचर्या पर काफी प्रभाव डाला है। पहले कई लोगों के दिन की शुरूआत चाय के प्याले और समाचार पत्र के साथ होती थी। लेकिन अब इंटरनेट के प्रभाव के कारण कई बड़े समाचार पत्र इंटरनेट पर भी उपलब्ध हैं और लोगों के दिन की शुरूआत चाय के प्याले और इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर के सामने होती है। आप भी चाहें तो अपना दिन, इंटरनेट पर, अपना मनपसंद अखबार पढ़कर शुरू कर सकते हैं। कुछ देशी विदेशी समाचार पत्रों के वेब ठिकानों के पते इस प्रकार हैं।

टाईम्स ऑफ इंडिया — www.timesofindia.com
हिंदुस्तान टाईम्स — www.hindustantimes.com
द हिंदू — www.the-hindu.com
इकोनॉमिक टाईम्स — www.economictimes.com
वाशिंगटन पोस्ट — www.washington.com
रांची एक्सप्रेस — www.ranchiexpress.com
राजस्थान पत्रिका — www.rajasthanpatrika.com
दैनिक जागरण — www.jagran.com

सिर्फ समाचार पत्र ही नहीं, बल्कि कुछ टीवी चैनल भी इंटरनेट पर अपने प्रोग्राम दिखा रहे हैं। जो समाचार पत्र नही पढ़कर टीवी देखने के शौकीन हैं, वे अब इंटरनेट पर अपना मनपसंद चैनल देख सकते हैं। कुछ देशी विदेशी चैनलों के वेब ठिकाने इस प्रकार हैं-

सी.एन.एन — www.cnn.com
बी.बी.सी. — www.bbc.co.uk
दूरदर्शन — www.ddindia.com
एम.टीवी — www.mtv.com
डिज्नी वर्ल्ड — www.disney.com
फैशन टीवी — www.ftv.fr

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

ई-मेल : मुसीबतों का जंजाल

कम्प्यूटर, इंटरनेट और ई-मेल ने संचार क्षेत्र में क्रांति ला दी है। पलक झपकते ही आपका संदेश दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक जा पहुंचता है और वह भी काफी कम खर्च में। लेकिन अगर यही ई-मेल संदेश ढूंढने में आपको घंटो लग जायें तो!

जी हां, यह हकीकत भी हो सकता है। टी.वी., रेडियो की तरह इंटरनेट उपयोक्ताओं के ई-मेल एकाउंट भी तरह-तरह के विज्ञापनों, धनवान बनने के नुस्खों, डिस्काउंट प्रस्तावों आदि से भरे रहने लगे हैं और ई-मेल के इस समुद्र में काम की ई-मेल ढूंढना काफी मुश्किल साबित होने लगा है। यदि इन विज्ञापन भरे ई-मेल संदेशों के बीच किसी ई-मेल में वायरस छुपा हो तो कयामत आ जाती है इंटरनेट उपयोक्ता के लिये। ऐसे ई-मेल संदेशों से सिर्फ उपयोक्ता ही नही वरन, इंटरनेट सेवा प्रदाता भी काफी परेशान रहते हैं।

इंटरनेट पर इस तरह के ई-मेल संदेशों को जंक मेल भी कहा जाता है। इंटरनेट उपयोक्ताओं में करीब 80 प्रतिशत उपयोक्ता जंक मेल को सख्त रूप से नापसंद करते हैं। कुछ उपयोक्ताओं का तो यह भी कहना है कि जंक मेल पर रोक लगाने के लिये कानून बनना चाहिये।

जंक मेल की शुरूआत कुछ ऐसे लोगों ने की जिन्होंने अपके ग्राहकों के उत्पादों और सेवाओं के विज्ञापन के लिये ई-मेल का सहारा लिया। इसमें खर्च भी कम आता है और विज्ञापन का प्रसार भी तेजी से होता है। धीरे-धीरे कंपनियों को यह तरीका पसंद आने लगा और उपयोक्ताओं के मेल बॉक्स में जंक मेल की तादाद बढ़ने लगी। कई लोग जान बूझकर किसी खास व्यक्ति के ई-मेल पते पर बड़ी तादाद में संदेश भेज देते हैं। इससे न सिर्फ उस खास पते पर अन्य संदेशों के पहुंचने में विलंब होता हैं, बल्कि संबंद्ध सेवा प्रदाता की ई-मेल प्रणाली के जाम होने की आशंका भी रहती है।

जंक मेल भेजने वालों को देने में, कुछ वेब ठिकाने भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हैं। ये इच्छुक लोगों को उपयोक्ताओं के पते की सूची या तो बेच देते हैं या किराये पर दे देते हैं। एक बार आपका ई-मेल पता ऐसे लोगों के पास पहुंच गया तो फिर जंक मेल के समुद्र में गोते खाने से आपको कोई नही रोक सकता। सवाल यह है कि जंक मेल से पीछा छुड़ाने की जिम्मेदारी कौन सभालेंगा। इंटरनेट सेवा प्रदाता या खुद उपयोक्ता। कुछ लोगों का मानना है कि जिस तरह डाक विभाग अनचाही चिट्ठियों को और टेलीफोन विभाग अनचाही कॉल्स, को नही रोक पाते, उसी तरह इंटरनेट सेवा प्रदाता भी अनचाही ई-मेल यानी जंक मेल को नही रोक सकते। ऐसे में सारी जिम्मेदारी उपयोक्ता के कंधे पर आ जाती है।

अगर आप अपने ई-मेल एकाउंट को जंक मेल से भरने से बचाना चाहते हैं तो नीचे बतायें गये उपाय आपके लिये लाभदायक हो सकते हैं।

- *किसी भी वेब ठिकाने पर अपना पंजीकरण कराने से पहले उस वेब ठिकाने की ''व्यक्तिगत सूचना सुरक्षा'' संबंधी नीति पढ़ लें।*
- *जंक मेल के द्वारा विज्ञापित सेवाओं और उत्पादों को न खरीदें। ऐसा करने से जंक मेल भेजने वालों के हौसलें बढ़ते हैं।*
- *कई जंक मेल भेजने वाले अपनी लिस्ट से आपका नाम हटाने की पेशकश करते हैं। इनका जवाब मत दीजिये। जवाब देने का मतलब है आपके ई-मेल पते की पुष्टि तथा ज्यादा जंक मेल।*
- *जंक मेल भेजने वाले के बारे में अपने इंटरनेट सेवा प्रदाता तथा संदेश भेजने वाले के सेवा प्रदाता को सूचना दें।*
- *आजकल कुछ ई-मेल सॉफ्टवेयर में फिल्टर आप्शन होता है इसका प्रयोग करके आप, संदेश और उसे भेजने वाले के नाम या पते के आधार पर, आटोमैटिक तरीके से छांट सकते हैं।*

कुछ सेवा प्रदाताओं ने जंक मेल पर रोक लगाने के लिये कुछ सॉफ्टवेयर्स का विकास भी किया, लेकिन जंक मेल भेजने वालों ने इसका भी तोड़ निकाल लिया। उन्होंने अपना नाम पता बदलकर संदेश भेजने शुरू कर दिये। इंटरनेट पर कुछ ऐसे वेब ठिकाने मौजूद हैं जो जंक मेल और इससे निपटने के तरीकों के बारे में उपयोक्ताओं को शिक्षित कर रहे हैं। जंक मेल से निपटने के लिये सबसे जरूरी यह है कि अपने ई-मेल पते की सुरक्षा की जाय। उपयोक्ताओं के पते,

इंटरनेट पर बारात सजायें

इंटरनेट ने विश्व के सामने कई नये आयाम पेश किये हैं। चाहे कोई भी क्षेत्र हो, इंटरनेट से अछुता बच पाना नामुमकिन है। अभी तक इंटरनेट के द्वारा विवाह योग्य वर-वधू की तलाश तथा शादी के सामान की खरीदारी ही की जाती थी, लेकिन अब इंटरनेट पर शादी भी शुरू हो गई है। इस शादी में शामिल अधिकतर बाराती भी इंटरनेट पर मौजूद रहते हैं। पढ़कर कुछ अजीब सा लग रहा होगा। आइये, हम आपको बताते हैं कि इंटरनेट पर शादी कैसे होती है।

इंटरनेट की शादी को रिकार्ड करने के लिये एक खास तरह के कैमरे का प्रयोग किया जाता है, जिसे वेब कैम कहते हैं। ये वेब कैम इंटरनेट सर्वर से जुड़े होते हैं तथा कुछ सैकेंड के अंतराल के बाद शादी की फोटो खींचकर सर्वर को भेज देते हैं। उस सर्वर से जुड़े लोग अपने कम्प्यूटर के सामने बैठकर शादी का आनंद लेते हैं। इंटरनेट पर इस तरह की शादी देखना एक तरह से शादी की एलबम देखने के समान होता है।

एक दूसरी तरह के वेब कैम भी होते हैं, जो शादी की फोटो लगातार इंटरनेट सर्वर को भेजते रहते हैं। इंटरनेट पर इस तरह की शादी देखना, शादी की वीडियो कैसेट देखने के समान होता है।

इस तरह की शादी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे दुनिया के किसी भी हिस्से में बैठकर शादी देखी जा सकती है। इस तरह जो मित्र तथा रिश्तेदार विवाह में शामिल नही हो सकते, वे भी इंटरनेट के जरिये विवाह समारोह का आनंद ले सकते हैं।

तो क्या आप भी तैयार हैं इंटरनेट शादी के लिये?

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

इंटरनेट द्वारा भूखों को मुफ्त में भोजन खिलाइये!

क्या आप जानते हैं कि पूरे विश्व में हर 3.6 सैकेंड में भूख की वजह से एक मौत होती है और इन मरने वाले लोगों में तीन चौथाई पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चे होते हैं। यह तथ्य इंटरनेट पर मौजूद एक वेब ठिकाने पर दिया गया है। इस ठिकाने के मुताबिक हर रोज करीब 24,000 लोग भूख या भूख से संबंधित अन्य कारणों से मरते हैं। आज से दस साल पहले यह संख्या 35,000 और बीस साल पहले 41,000 थी।

मौत के अलावा भूख से दृष्टिहीनता, बहरापन तथा अन्य कई बीमारियां हो सकती हैं। इस वेब ठिकाने के अनुसार विश्व भर में करीब अस्सी करोड़ लोग भूख तथा कुपोषण के शिकार हैं यानि इस वजह से होने वाली मौतों से सौ गुणा ज्यादा।

इस वेब ठिकाने पर इन तथ्यों के अलावा भूख से संबंधित कुछ और रोचक जानकारियां भी हैं। कुपोषण तथा भूख से पीड़ित लोगों की मदद में लगी कुछ सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं की लिस्ट तथा उनके वेब ठिकानों के पते भी आपको यहां मिल जायेंगे। इस वेब ठिकाने पर एक बटन बना है जिसे दबाकर कोई भी व्यक्ति इस वेब ठिकाने के द्वारा मुफ्त में खाना दान कर सकता है।

मुफ्त में इसलिये कि यह वेब ठिकाना कुछ कंपनियों को प्रायोजक बनाता है, जो इस वेब ठिकाने पर आने वाले लोगों द्वारा दान किये गये खाने के खर्चे को वहन करती है। ये प्रायोजक कंपनियां दान किये गये खाने में आने वाली लागत को कुछ स्वयं सेवी संस्थाओं को दे देती हैं, जो कुपोषण और भूख के शिकार लोगों की मदद में जुड़ी हैं।

इस वेब ठिकाने पर दान देने वाले लोगों की संख्या देश के हिसाब से मौजूद है। इस लिस्ट में सबसे ऊपर अमेरिका का नाम है जहां से वर्ष 1999 में अब तक 265,914 लोगों ने दान दिया है। भारत इस लिस्ट में 17वें नबंर पर है 1,375 की दान संख्या के साथ। जबकि हमारे अन्य पड़ोसी देश जैसे पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका आदि इस लिस्ट में काफी नीचे हैं। वर्ष 1999 में अभी तक कुल 356,766 लोगों ने इस वेब ठिकाने के द्वारा खाना दान किया है।

प्रायोजक कंपनी को धोखाधड़ी से बचाने के लिये यह वेब ठिकाना कुछ ऐसे सॉफ्टवेयर प्रयोग करता है, जिनकी वजह से कोई व्यक्ति एक दिन में एक ही बार खाना दान कर सकता है। दान किया गया भोजन, एक व्यक्ति की एक समय की खुराक, के बराबर होता है। जैसे ही कोई व्यक्ति इस वेब ठिकाने द्वारा भोजन दान करता है तो उसकी स्क्रीन पर धन्यवाद ज्ञापन के साथ-साथ प्रायोजक कंपनी का नाम भी आ जाता है। अगर आपके मन में भी भूखे लोगों के लिये कुछ करने की इच्छा है तो इस वेब ठिकाने पर जाइये और दबा दीजिये "Donate Free Food" का बटन। इस वेब ठिकाने का पता है http://thehungersite.com।

इंटरनेट द्वारा ढूंढ़े जीवनसाथी

भारतीय समाज में आज भी लड़के-लड़कियों की जोड़ी मिलाने का काम पंडितजी करते हैं। कुछ महानगरों में विवाह योग्य युवक युवतियों के लिये जोड़ी ढूंढने के लिये समाचार पत्रों में विज्ञापन देने का चलन निकल पड़ा है। धीरे-धीरे यह चलन इंटरनेट की ओर झुकाव ले रहा है। इंटरनेट पर मौजूद कई ठिकानों पर विवाह संबंधी विज्ञापन देखें जा सकते हैं। इन अनगिनत वेब ठिकानों में एक ठिकाना सिर्फ भारतीयों के लिये भी है।

इस वेब ठिकाने पर जाति के आधार पर श्रेणियां बनाई गयी हैं। जिनमें से आप अपनी पसंद की श्रेणी चुनकर उसके अंतर्गत मौजूद विज्ञापन देख सकते हैं। पसंद आने पर आप इस वेब ठिकाने के द्वारा विज्ञापनदाता से संपर्क भी कर सकते हैं।

आप अगर अपना विज्ञापन देना चाहते हैं तो वो भी दे सकते हैं, लेकिन इस वेब ठिकाने पर अपना विज्ञापन देने के लिये आपको कुछ खर्च भी करना पड़ता है। कुछ अतिरिक्त खर्च करके आप विज्ञापन के साथ फोटो भी दे सकते हैं।

इस वेब ठिकाने के अन्य आकर्षण हैं चेट रूम तथा अन्य भारतीय वेब ठिकानों की लिस्ट। यह वेब ठिकाना कोट्टयम की एक कंपनी द्वारा तैयार किया गया है और इसका पता है http://www.indianalliance.com।

THE RANCHI EXPRESS GROUP

PRINT
ELECTRONIC
INTERNET

चिट्ठी आई है...

टेलीफोन के आविष्कार से पहले लोग रोजाना डाकिये का इंतजार करते थे। टेलीफोन की सुविधा आ जाने से लोग धीरे-धीरे चिट्ठी लिखना भूलने लगे एवं साथ ही डाकिये का महत्व भी कम होने लगा, लेकिन लगता हैं इंटरनेट लोगों को दोबारा डाकिये की राह देखने के लिए मजबूर कर देगा। है न आश्चर्य की बात?

एक तरफ तो हम कहते हैं कि इंटरनेट ने दुनिया को पहले से भी ज्यादा छोटा कर दिया है। संदेशों का आदान-प्रदान पलक झपकने की गति से होने लगा है, दूसरी तरफ हम कह रहे हैं कि इंटरनेट की वजह से लोग डाकिये का इंतजार करना शुरू कर देगें। चौंकिये मत! दोनों ही बातें अपनी-अपनी जगह सही है।

महानगरों में या कुछ शहरों में जहां लोगों के पास इंटरनेट की सुविधा है, वे दुनिया के किसी भी कोने में बैठे अपने सगे संबंधी, दोस्तों या व्यापारिक भागीदारों से तुरंत संपर्क कर सकते हैं और वह भी एक लोकल कॉल के खर्चे पर। जिन शहरों में या जिन लोगों के पास इंटरनेट कनेक्शन नही है, उनको विदेशों में रह रहे अपने प्रियजनों से संपर्क साधने के लिये टेलीफोन पर निर्भर रहना पड़ता है। यह साधन काफी खर्चीला साबित होता है। अत: अति आवश्यक होने पर ही लोग इसका प्रयोग करते हैं। इन मामलों में चिट्ठी भेजना आम तौर पर लोग पसंद नही करते क्योंकि ऐसा करने में खर्च भी काफी आता है और संदेश पहुंचने में समय भी काफी लगता है। ऐसे में अगर कोई, आपके प्रियजन का संदेश, मुफ्त और काफी कम समय में, आप तक पहुंचा दे तो आप करेंगे न डाकिये का इंतजार।

जी हां, यहां हम बात कर रहे हैं कुछ ऐसे वेब ठिकानों की जो विदेशों में बैठे आपके प्रियजनों के संदेश, आप तक पहुंचाते हैं और वह भी बिल्कुल अपने खर्च पर।

ऐसे वेब ठिकानों में प्रमुख है 'डाक इंडिया'। पहले **डाक@चंडीगढ़** के नाम से शुरू हुआ यह वेब ठिकाना सिर्फ चंडीगढ़ के क्षेत्र में ही चिट्ठी पहुंचाने का काम करता था, लेकिन अब इसका कार्यक्षेत्र पूरे भारत में है। कोई भी व्यक्ति जो विदेश में रहता है, **डाक इंडिया** के वेब ठिकाने पर जाकर इस सेवा का लाभ उठा सकता है, इसके लिये उस व्यक्ति को अपना नाम, पता, ई-मेल पता, पाने वाले का नाम, पता तथा अपना संदेश इस वेब ठिकाने पर उपलब्ध डाक फार्म में भरना पड़ता है। शर्त सिर्फ यही है कि भेजने वाला भारत से बाहर रहता हो तथा संदेश व्यापारिक न हो। **डाक इंडिया** को जब यह संदेश प्राप्त होता है तो इसका प्रिंट निकाल कर पाने वाले के पते पर भेज दिया जाता है।

इस तरह की सेवा प्रदान करने वाला एक और वेब ठिकाना है **रांची एक्सप्रेस** का। रांची एक्सप्रेस की सेवा का नाम है 'एक्सप्रेस मेल' और यह सिर्फ दक्षिण बिहार के लोगों के लिये है। विदेश में रहने वाला कोई भी व्यक्ति, दक्षिण बिहार में रहने वाले अपने प्रियजनों को **रांची एक्सप्रेस** के वेब ठिकाने द्वारा संदेश भेज सकता है। इस वेब ठिकाने द्वारा संदेश भेजने के लिये लोगों को एक्सप्रेस मेल फार्म भरना पड़ता है। संदेश मिलने पर रांची एक्सप्रेस द्वारा इसका प्रिंट निकाल कर, भारतीय डाक सेवा द्वारा, पाने वाले के पते पर भेज दिया जाता है।

डाक इंडिया के वेब ठिकाने का पता है http://www.dakindia.com तथा **रांची एक्सप्रेस** के वेब ठिकाने का पता है http://www.ranchiexpress.com

इन वेब ठिकानों द्वारा उपलब्ध करायी जाने वाली इन मुफ्त सेवाओं की वजह से विदेशों में रह रहे भारतीय काफी लाभान्वित हुए हैं। अब वे अपने हाल चाल पहले से ज्यादा बार और विस्तार में अपने प्रियजनों को भेज सकते हैं और वह भी बिल्कुल मुफ्त में। दूसरी ओर भारत में उनके प्रियजन अब डाकिये का इंतजार करना शुरू कर देंगे। क्योंकि उन्हें पता है कि ''चिट्ठी आई है....''

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

Great!! The very first newspaper of my life is now online. Cheers!!!

- Ravi Shankar Gupta, Kansas City, KS USA

ab keya comment bole baba hamar to muhve band ho gale hau ab sochih bos MOSCOW me bath ke apan peyara ranchiexp. dekh aur pad rahle hio u vi hindi me! MAN GALIO BABA SAHI ME NAYA JAMANA PAHUCH GAILE HAU very very aur ek bar very thanks baba.

- girindra kumar, moscow

---

i have been regular reader of ranchi express since my childhood days. i am really fond of this newspaper. i am really missing ranchi. i just want to settle in ranchi again so that i can have everything of my own

- MANOJ KUMAR, chennai, india

Wonderful! Born in Ranchi 49 (Mandar Hosp) lived in McCluskiegunge... left in 62.. visited in 95 & 97.. shall keep watching the site.. open to chat.. best wishes

- Gerry McPhail, Croydon, Surrey England

My sincere thanks to all those with RE who made it possible to present our RANCHI to the world at large.We will all be seeing the most loved place where my roots lie through your page from this part of the world .Cheers.

- Debasis Baksi, Oxfordshire, U.K.

It is great to find Ranchi in the internet. I remembered my childhood days when I read the newspaper. Do give more news about Ranchi. Hope to see the complete RE edition in near future.

- RAJESH JAISWAL, Calcutta, India

Whoa!! It is really great to see so many info about Ranchi at one site. Spending major portion of my life in BWBS and St. Xaviers, coming across something like this gives me a great sense of pride. Good work done guys! Thanks for putting Ranchi on the global arena of cyberspace. Let's now make it BIG. Wishing you all the best in your efforts. PROUD TO BE A RANCHITE!

- Anurag Tuti, New Delhi, India

Its Great Great Great really Great to see Ranchi Express Online. My Mom can get all the news thru this page when she wd come to US . She is crazy about Ranchi Express . Keep it up Guys !!

- Rashmi Verma, Atlanta, Georgia USA

JEEZ, this one is hard to believe. RE goin' online. itz been 11 yrs and I cud still smell the freshness?? (Gosh! this titillates even the primitive limbic system!!) lotsa thanks to all those who made this happen(though a scope of enhancement certainly persists..) must say this revolutionary or rather an evolutionary step wud surely put our beloved city on this inter-galactic space.. (a small step by RE but a giant leap for ..?) RE as such attached to the very heart and soul of Ranchi, 'll always be adored , even by the hardcore critics (like a friend of mine, Prem, who always had this complain of finishing off the paper before reaching his doorstep..hey! he only mailed me this URL..Prem r u listening??.. this enlivens our ageold competition ??) Hope u all are proactive in keeping this candle burning.

- Mantosh Kumar, Houston, TX, US

It's amaze to see our South Bihar on the Web. It's really good to know about the city where one spent there 20 years. Thanks a lot to all the staff members of Ranci Express and Good luck to whole team .

- Rajesh Tiwari, Strovolos, Nicosia, Cyprus

What a feeling? Sitting at Kharagpur, gathering the news from Ranchi everyday. It's fantastic.

- Probal Sengupta, IIT, Kharagpur,India

I was really surprised to see our very own "Ranchi Express" on web. Seeing the photos of Firayalal Chowk then down the main road Hotel chinar, kaveri, sainik bazar and the different falls of our Ranchi, for a moment it seems that I was travelling there. Awesome, very good job. My best wishes are always with the Ranchi Express Group.

- Dipangshu Maitra, Norristown, PA USA

It was really exhilarating to learn Ranchi Express getting online. And one cannot escape the nostalgia that one is struck with, while browsing this site. More so, the Express Mail really attempts to bridge the geographical miles with the loved ones back at Ranchi and other parts of South Bihar. This is indeed a marvelous and a splendid achievement by Ranchi Express. Kudos to Ranchi Express for the spectacular accomplishment.!!

- Shashank S. Prasad, Germantown, Maryland, USA

It is great to be in touch with ranchi through ranchi express...and what more i found some of my bumchums on the guest page... thanx to u ranchi express.

- Abhishek Singh, Kohima, Nagaland India

I was thinking of starting a site for Ranchi. Went thru the motion a lot of times, but gave up the horrendous task, with due respect to the job I am in. RE you beat me!!!!! Ranchi has mothered generations of IITians and CMC Vellorians (name an institution and you will find a Ranchite). It sure deserved a site. There is a lot of things I would like to do (I am sure there will be a long queue of people wanting to contribute). Since you have taken the lead, I hope you will be the nerve centre of activities in this area. Keep it up. And lose not the lead you've taken. There is enough talent having origins in that area which will help you score points by every passing day.

- Abhishek Ranjan Singh, Silver Spring, MD, USA

Thanks! for the website. I am from Ranchi. It is one place I love the most. It make me really happy to read anything about Ranchi. Inspite of powercuts, water shortage,broken roads etc. I miss it. I hope opportunities increase in Ranchi and we can all come back to Ranchi. I miss the aimless 'addas' at firayalal chowk. I would love to see more news in the web edition.

- Indranil Sen, Washington DC, USA

I can't express or write my feelings. I am very much glad to get the RANCHI EXPRESS on internet. I have never expected the R..E.. like this. JAB TAK SURAJ CHAND RAHEGA RANCHI EXPRESS TERA NAAM RAHEGA. Thanks very much.

- GOVIND SINGH, SYDNEY, N.S.W., AUSTRALIA

RANCHI EXPRESS GROUP

Biggest Media House in Bihar

Print

RANCHI EXPRESS

(Morning Hindi Daily)

SANDHYA RANCHI EXPRESS

(Afternoon Hindi Daily)

EXPRESS INFO BOOK

(Annual Comprehensive Information / Business Guide)

Electronic

DRISHTI

(Weekly News Capsule on Cable Channel)

Internet

http://www.ranchiexpress.com

not only news, a portal to South Bihar

Express Bhawan, 55 Baralal Street, Ranchi-834001
Tel : 0651-206320; Fax : 0651-203466; e-mail : rexpress@dte.vsnl.net.in

5/14, INS Bldg., Rafi Marg, New Delhi-110001
Tel : 011-3717922; Fax : 011-3714167; e-mail : ranchiexpress@vsnl.com